Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-34
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 07 नवम्बर से 13 नवम्बर 2018 तक
कार्तिक कृष्ण अमावस्या से कार्तिक शुक्ल षष्ठी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

मनुष्य योनी छोड़ते... पृष्ठ- 2

औषधीय गुणों से.... पृष्ठ- 4

भारत सदियों से विश्व... पृष्ठ- 7

भाई बहन के अटूट.... पृष्ठ- 8

सत्ता के सौदागरों.... पृष्ठ- 12

शुभकामना संदेश

सभी देशवासियों व पाठकों को भगवान सूर्य की अराधना के महान छठपर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्रप्रकाश कौशिक — राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा — राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी — राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

आतंक का समर्थन बंद करे पाक : सेना प्रमुख

• संवाददाता •

भारतीय सेना प्रमुख जरनल विपिन रावत ने पत्थरबाजी में जवान की शहादत पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पत्थरबाजों से सख्ती से निपटा जाएगा। सेना प्रमुख रावत ने पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर उसने आतंकवाद को समर्थन देना बंद नहीं किया तो सेना के पास जवाब देने के दूसरे तरीके भी हैं। सेना प्रमुख ने कहा, "पाकिस्तान की तरफ से घुसपैठ लगातार जारी है, आतंकवादियों को लगातार ट्रेनिंग दी जा रही है और

शेष पृष्ठ 11 पर

कोरेगांव-भीमा हिंसा-सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक

• संवाददाता •

कोरे गांव–भीमा हिंसा पर उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ ने महाराष्ट्र सरकार की अपील पर गौर करते हुए हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी और याचिका पर नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं को नोटिस जारी किया। सुप्रीम कोर्ट ने बंबई हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी जिसमें उसने कोरेगांव–भीमा हिंसा मामले में आरोप–पत्र दाखिल करने के लिए राज्य की पुलिस को और समय देने से इंकार कर दिया था। हिंसा मामले में नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं के खिलाफ जांच रिपोर्ट दायर करने की खातिर पुलिस को और समय देने के निचली कोर्ट के आदेश को बंबई हाईकोर्ट ने हाल में निरस्त कर दिया था। चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ ने महाराष्ट्र सरकार की अपील पर गौर करते हुए हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी और याचिका पर नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं को नोटिस जारी किया। इससे पहले शीर्ष अदालत ने कोरेगांव–भीमा हिंसा मामले के सिलसिले में महाराष्ट्र पुलिस द्वारा नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करने के मामले में दखल देने से इंकार कर दिया था। साथ ही उनकी गिरफ्तारी की जांच के लिए एसआईटी गठित करने से भी इंकार कर दिया था।

मनुष्य योनि छोड़ते समय जीव की तीन गतियाँ

✍ खुशहाल चन्द्र आर्य

मनुष्य शरीर को छोड़ने के बाद जीव की तीन गतियाँ होती है। वह जीव अपने कर्मानुसार किसी भी एक गति में जाता है। वे तीन गतियाँ निम्नलिखित हैं (१) मनुष्य योनि से मनुष्य योनि में जाना (२) मनुष्य योनि से नीचे की योनियाँ पशु–पक्षी, कीट–पतंगे व गन्दी नाली से कीड़े की योनि में जाना। (३) मनुष्य योनि से सीधा मोक्ष में जाना। इन तीनों गतियों का संक्षिप्त वितरण इस भाँति है।

१. **मनुष्य से मनुष्य योनि में जाना :** जब जीव मनुष्यों योनि में रहता था, उस समय यदि उसने ५० प्रतिशत या इससे अधिक शुभ कर्म किये होंगे तो इसको अगली योनि भी मपुष्य की ही मिलेगी। इसमें अन्तर यह रहेगा कि वह मनुष्य योनि में जितने–जितने अधिक अच्छे व शुभ कर्म करेगा। इस जीव को अगली मनुष्य योनि उतनी ही अच्छी मिलती जायेगी। यानि वह जीवन अपनी पहली मनुष्य योनि में ५० से ६० प्रतिशत अच्छे कर्म किये हैं तो उसको अगली मनुष्य योनि साधारण स्तर की मिलेगी। यदि वह ६० से ७० प्रसेन्ट अच्छे कर्म किये है तो मनुष्य योनि का और अच्छा स्तर मिलेगा। यदि उस जीव में ७० से ८० प्रतिशत अच्छे कर्म किये हैं तो किसी अच्छे साहुकार या किसी अच्छे शिक्षित–माता–पिता के घर जन्म होगा। और यदि ८० से ९० प्रतिशत अच्छे कर्म किये है तो किसी बड़े साहुकार या किसी अच्छे एम.पी. या मंत्री के घर होगा। यदि ९० प्रतिशत से भी अधिक अच्छे कर्म किये होते है तो किसी राजा या प्रधानमंत्री के घर होगा। इस प्रकार जितने अच्छे कर्म अधिक होते जायेगे उतना ही अगले जन्म का स्तर बढ़ता जायेगा।

२. **मनुष्य से नीचे की योनियों में जाना :** यदि मनुष्य योनि में जीव ५० प्रतिशत् से कम अच्छे कम किये यानि बुरे कर्म ५० प्रतिशत से अधिक किये तो उसको क्रमशः नीची योनियाँ मिलती जायेंगी। यानि यदि ५० से ६० प्रतिशत बुरे कर्म करता है तो उसे पशु की योनि गाय, कीड़ा, हाथी आदि मिलेगी। यदि ६० से ७० प्रतिशत बुरे, कर्म करता है तो पशु योनि में ही नीचे के स्तर के पशु यथा गधा या सूअर आदि की योनि ही मिलेगी और अधिक बुरे कर्म करता है तो पक्षी की योनि मिलेगी और अधिक बुरे कर्म करेगा तो कीट–पतंगे की योनि मिलेगी। यदि और अधिक बुरे कर्म करेगा तो गन्दी नाली के कीटाणुओं की योनि मिलेगी। इस प्रकार योनि का स्तर घटता जायेगा।

३. **मनुष्य योनि से सीधा मोक्ष में जाना :** जो जीव मनुष्य योनि में १०० प्रतिशत अच्छे व शुभ कर्म करेगा, वह जीव मनुष्य शरीर छोड़ने के बाद सीधा मोक्ष में चला जायेगा। और मोक्ष में ईश्वर के सान्निध्य में रहता हुए परम आनन्द को प्राप्त करता रहेगा। पहले यह धारणा थी कि मोक्ष प्राप्त करने के बाद जीव हमेशा के लिए मोक्ष में रहेगा यादिन आवागमन के बंधन में नहीं आवेगा। इसका तात्पर्य है कि जन्म–मरण के चक्कर से छुट जायेगा। परन्तु महर्षि दयानन्द की एक यह सही देन है कि उन्होंने वेदों के आधार पर मोक्ष की भी अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष बताई है। महर्षि ने कहा कि मोक्ष, अच्छे कर्मो का फल है। यदि अच्छ कर्म करने की अवधि है तो उसको फल की भी अवधि भी निश्चित ही होगी। चाहे वह कितनी भी लम्बी भी निश्चित ही होगी। चाहे वह कितनी भी लम्बी हो। दूसरा मोक्ष की अवधि होने का कारण यह है कि यदि मोक्ष की अवधि न हो तो जीव मोक्ष में जावेगा और आवेगा नहीं तो एक दिन ऐसा आ जावेगा कि सभी जीव मोक्ष में चले जायेंगे और सृष्टि समाप्त हो जायेगी परन्तु सृष्टि हमेशा बनती बिगडती रहती है इसलिए मोक्ष की अवधि मानना अति आवश्यक है। अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य एक अल्पज्ञ जीव है, उससे पूरे जीवन में कोई भूल या गलती हो ही जाती है इसलिए १०० प्रतिशत अच्छे काम करना किसी के लिए सम्भव नही है। इसलिए १०० प्रतिशत का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में जो भी कार्य करता है वह खाना–पीना,सोना–जागना, उठतना–बैठना नित्य कर्म की इस भावना से करता है कि मैं अधिक जीवित रहकर मानव मात्र की ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र की अधिक सेवा व हित कर सकूँ। शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह परिवार में सभी लोगों की अपनी अलग–अलग सीमायें तय होती है। उस सीमा को लाघनें का प्रयास न करें। जरूरी नहीं कि हर बात पर किसी को तवज्जों दी जाये। गलत निर्णय ही गलतियों को बढ़ावा देते है।

वृष : इस सप्ताह आपकी मनः स्थिति अनियंत्रित हो सकती है। राजनैतिक लोगों के साथ कुछ समय व्यतीत होने के संकेत है। धैर्य व साहस आपकी पहचान हैं इसे बरकरार बनायें रखना अतिआवश्यक है। सन्तान के साथ अत्यधिक वार्तालाप न ही करें।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों को किसी से लाभ लेने का मौका मिलेगा परन्तु आपका स्वाभिमान ऐसा करने नहीं देगा। आप यदि गैर सरकारी संस्था बनाने चाहते है, तो किसी नजदीकी व्यक्ति को महत्वपूर्ण पद न दें अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा।

कर्क : इस सप्ताह आप कुछ कार्यो को लेकर असमंजस की स्थिति में पड़ सकते है इसलिए मन की स्वच्छता व ह्रदय की मिठास बनायें रखना आपके लिए अति आवश्यक है। आपकी स्वतन्त्र विचारधारा मुश्किलों को आसान कर देगी।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोग पारिवारिक कलह के कारण परेशान रह सकते हैं। मन में सन्तान के प्रति उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। छात्र अपने दोस्तों से ज्यादा वफादारी न निभायें। रूके हुये धन के प्रति सक्रियता बनायें रखें।

कन्या : इस सप्ताह आपके कैरियर व व्यवसाय में प्रगति होने की सम्भावना है। अर्थ की योजनायें फलीभूत होगी। व्यवसायी वर्ग अपना लेखा–जोखा मेनटेन रखें अन्यथा हल्का सा तनाव हो सकता है। छात्र इस समय अपनी पढ़ा पर पूरी तरह से फोकस करें।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोग जीविका को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे। नवयुवक अपने इष्ट मित्रों के कारण तनावग्रस्त हो सकते है। धन के मामलें में व्यर्थ की चिन्ता बनी रहेगी। अनावश्यक खर्चो पर नियन्त्रण रखना होगा वरना बजट बिगड़ सकता है।

वृश्चिक : नयी योजनाओं के प्रति मन उत्साहित रहेगा परन्तु अपने ही अंड़गा भी लगा सकते है। यदि आप को व्यवसाय आरम्भ करने जा रहें है, तो मंगलवार के दिन ही आरम्भ करें तो बेहतर रहेगा। रोजी व रोजगार से सम्बन्धित किये जा रहे प्रयासों में सफलता मिलने के आसार है।

धनु : कुछ लोगों की असमंजस वाली स्थिति इस सप्ताह मुसीबत में डाल सकती है, अतः इस पर नियन्त्रण करने का प्रयास करें। आर्थिक योजनाओं में किये प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे। मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है।

मकर : संघर्ष जीवन की आधारशिला है इसलिए आप चाहे जितनी बड़ी मुश्किल में हो परन्तु नकारात्मक विचारों को अपने ऊपर हावी न होने दे। आप यह न सोंचे कि आपकी किस गल्ती के कारण यह मुश्किल पैदा हुयी है। आपको यह सोचना है कि इससे कैसे निपटा जाए।

कुम्भ : इस समय सुनियोजित तरीके से की गई लगभग हर कार्य योजना सफल होगी। व्यावसायिक स्थान पर कई तरह के लोग होते है। सभी लोंगो के साथ सामंजस्य बनायें अन्यथा सहकर्मियों के साथ खटपट हो सकती है। सामाजिक सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

मीन : कुछ लोगों को इस वक्त सन्तान के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। छात्र अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें वरना विवाद हो सकता है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

ईश्वरः सर्वभूतानां ह्रद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।

हे अर्जुन! शरीर रूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्रवर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के ह्रदय में स्थित है।।६१।।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।

हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्रवर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा।।६२।।

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।।

इस प्रकार यह गोपनीय से भी अति गोपनीय ज्ञान मैंने तुम से कह दिया। अब तू इस रहस्ययुक्त ज्ञान को पूर्णतया भलीभाँति विचार कर जैसे चाहता है वैसे ही कर।।६३।।

सर्वगुह्यतमं भूयः श्रृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।।

सम्पूर्ण गोपनीयों से अति गोपनीय मेरे परम रहस्य युक्त वचन को तू फिर भी सुन। तू मेरा अतिशय प्रिय है, इससे यह परम हितकारक वचन मैं तुझसे कहूँगा।।६४।।

हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 07 नवम्बर से 13 नवम्बर 2018 तक

अध्यक्षीय

राम मंदिर पर अध्यादेश कितना जायज

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

बहुप्रतिक्षित राम जन्मभूमि–बाबरी मस्जिद जमीन विवाद पर सुनवाई को अगले साल जनवरी तक के लिए टाल दिया है। सुप्रीमकोर्ट के इस फैसले के साथ ही अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए कानून बनाने की मांग उठने लगी है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने विजयादशमी पर अपने भाषण में कानून बनाने की मांग की थी। वहीं केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि अब हिंदुओं का सब्र टूट रहा है। वहीं अब विश्व हिंदू परिषद ने भी सरकार से इस संबंध में कानून बनाने की मांग की है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'हिंदुओं की भावना है कि मंदिर बने' लेकिन जब कोई मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है तब क्या सरकार उस पर अध्यादेश ला सकती है? संविधान में कानून बनाने का अधिकार संसद के पास है। हालांकि जब संसद का सत्र नहीं चल रहा हो और त्वरित कार्रवाई की आवश्यकता हो तब सरकार अध्यादेश ला सकती है। हालांकि इस अध्यादेश को छह महीने के अंदर संसद में पारित करना अनिवार्य होता है। पारित नहीं होने पर अध्यादेश के तहत लाया गया कानून समाप्त हो जाता है। साल २०१६ में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अध्यादेश लाना संविधान के साथ धोखेबाजी है। कानूनी जानकारों के मुताबिक, कोर्ट में लंबित मामलों पर अध्यादेश लाने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। कुछ अधिवक्ताओं के अनुसार सरकार के पास कानून बनाने का पूरा अधिकार है और मामला कोर्ट में हो या न हो उस पर अध्यादेश लाया जा सकता है। मामला न्यायपालिका में लंबे होने पर भी सरकार अध्यादेश ला सकती है। कोर्ट की भूमिका तब शुरू होती है जब कानून पर अमल शुरू होता है और तब कोर्ट यह तय करता है कि कानून संविधान के दायरे में है या नहीं। वहीं संविधान के जानकार कुछ लोग कहते हैं कि न्यायपालिका में लंबित मामलों पर अध्यादेश लाने का चलन नहीं है। आमतौर पर ऐसा नहीं होता है। जब मामला न्याय पालिका में है तो उस पर अध्यादेश नहीं लाया जा सकता है। यदि कोई मामला संसद में है तो आमतौर पर कोर्ट उसमें दखल नहीं देता है। इसी तरह कोर्ट में लंबित मामलों पर संसद कानून नहीं बनाता है। हालांकि इसके लिए कोई कानूनी बाध्यता नहीं है। इस पर सहमति व्यक्त करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कहते हैं, अब तक किसी भी सरकार ने ऐसा नहीं किया है लेकिन इस पर कोई रोक नहीं है। संविधान में इस बारे में कुछ साफ नहीं कहा गया है। संविधान के जानकार इस मुद्दे पर कहते हैं कि यह दो पक्षों का लैंड डिस्प्यूट है और केंद्र सरकार इसमें दखल नहीं दे सकती है। वे कहते हैं कि "राम जन्मभूमि विवाद दो पक्षों का जमीन विवाद है। इस पर कानून कैसे बनाया जा सकता है? यह जमीन की प्राइवेट ओनरशिप का मामला है। प्राइवेट प्रॉपर्टी से जुड़े विवाद पर सरकार अध्यादेश नहीं ला सकती है। प्राइवेट जमीन केंद्र या राज्य की जमीन नहीं होती है। ऐसा तभी किया जा सकता है जब सरकार जमीन का अधिग्रहण करना चाहती हो। लेकिन किसलिए? एक समुदाय विशेष के लिए मंदिर बनाने के लिए? इसकी अनुमति ही नहीं मिलेगी। साल २०१० में इलाहाबाद हाईकोर्ट की तीन जजों की पीठ ने २:१ से फैसला दिया था कि २.७७ एकड़ की जमीन सुन्नी वक्फ बोर्ड, निर्मोही अखाड़ा और राम लल्ला के बीच बराबर बांटी जाएगी। इस फैसले के खिलाफ करीब १४ याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में चल रही हैं।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

दुर्घटनाओं से सबक लें सरकार

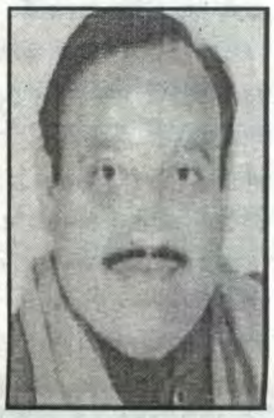

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

कुछ दिन पूर्व अमृतसर में रावण दहन के अवसर पर कुछ रेल से कटकर ६१ लोगों की मौत और डेढ़ सौ से अधिक लोगों के घायल होने की घटना सार्वजनिक कार्यक्रमों के आयोजकों की लापरवाही, मुख्य अतिथियों की संवेदनहीनता, प्रशासनिक तालमेल का अभाव और भीड़ के मनोविज्ञान को नहीं समझने का परिणाम है। इस तरह का यह पहला हादसा नहीं हैं पर अन्य हादसों में और इस हादसे में बड़ा अंतर भी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि एक और हम तार्किक अधिक हो रहे हैं, श्रावण में शिवजी के दूध चढ़ाने, दीपावली पर पटाखें छोड़ने या शबरी माला में पूजा करने या बैलों की दौड़ या तांगा दौड़ जैसे आयोजनों के पक्ष विपक्ष में जुबानी तलवारें निकाल कर आ जाते हैं वहीं हर मौहल्ले में या यों कहें कि गली गली में रावण और वह भी सबसे बड़ा रावण जलाने का चलन बढ़ता जा रहा है। घर घर में रावण जलाने का चलन कहां से आ गया यह समझ से परे है। आखिर पुलिस प्रशासन की भी सीमा है। एक समय था जब जहां रामलीला का मंचन होता था या कुछ प्रमुख स्थानों पर ही रावण दहन होता था। पहले इनमें रावण की आकृति को लेकर प्रतिस्पर्धा होने लगी तो फिर आतशिबाजी को लेकर और इसके बाद अन्य आकर्षणों को लेकर प्रतिस्पर्धा होने लगी। आयोजकों के जेहन में इस अवसर पर आने वाले लोगों के हुजुम को नियंत्रित करने का तो जैसे कोई रोडमेप ही नहीं होता। जहां तक अमृतसर हादसे का प्रश्न है इसमें सबसे बड़ी लापरवाही तो आयोजकों द्वारा प्रशासन से अनुमति नहीं लेना, मुख्य अतिथि का तय समय पर नहीं आकर भीड़ आने पर अपना भाषण सुनाना प्राथमिकता होना, रेलवे ट्रैक पास में होने के बावजूद रावण दहन के समय आने वाली ट्रेनों की समय सारणी को नजर अंदाज करना और रेलवे ट्रैक के पास में एलईडी पर डिसप्ले करना बड़ी भूलों में से हैं। पुलिस प्रशासन अनुमति नहीं लेने की बात कहकर जिम्मेदारी से इसलिए नहीं बच सकता क्योंकि जब रावण दहन जैसा कार्यक्रम हो रहा है और उसमें भीड़ जुटना स्वाभाविक है तो ऐसे में अनजाने में आयोजन की बात गले नहीं उतरती। आखिर प्रशासन का सूचना तंत्र ऐसे मौकों पर कहां चला जाता है। हालांकि सत्तारुढ़ दल का आयोजन होने से प्रशासन की अनदेखी भी एक कारण हो सकती है। पर ६३ लोगों की मौत और डेढ़ सौ से अधिक लोगों के घायल होने के लिए सभी को कठघरें में खड़ा करने के साथ ही हत्या की धाराएं लगाकर सजा देने के कदम उठाना इसलिए जरूरी हो गया है कि आखिर अमृतसर का आज का जलियांवाला कांड लापरवाही का ही नतीजा है। रेलवे प्रशासन को भी क्लीन चिट इसलिए नहीं दी जा सकती कि जब रेलवे ट्रैक के पास कोई आयोजन हो तो लोगों के हुजुम को देखते हुए रेल प्रशासन को भी सतर्कता बरतनी चाहिए थी। इसी तरह से रेलों में धुंध के समय भी देखने के साधन होते हैं ऐसे में रेलवे ट्रैक पर लोगों की उपस्थिति के बावजूद रावण दहन के कारण धुआं व आतिशबाजी के कारण दिखाई नहीं देना ट्रेन चालक की लापरवाही को कम नहीं कर देती। समाज के बदलते स्वरूप में देखादेखी, परस्पर प्रतिस्पर्धा, राजनीतिक या सामाजिक माइलेज प्राप्त करने की ललक और अंधी दौड़ का परिणाम अमृतसर हादसें का प्रमुख कारण है। जो लोग कम मुआवजों को लेकर आवाज उठा रहे हैं उनसे पूछा यह जाना चाहिए कि क्या मुआवजों से किसी की जिंदगी वापस आ सकती है? क्या मुआवजा ही समस्या का समाधान है? क्या दोषियों को सजा तक पहुंचाना पहली आवश्यकता नहीं है? अमृतसर हादसे में एक बात साफ है कि यह ना तो कोई आतंकवादी घटना है ना ही अफवाह जनित या सोशल मीडिया के वायरल मैसेज की प्रतिक्रिया स्वरूप हुई घटना है। बल्कि कहा जाए तो यह जिम्मेदारों के गैर जिम्मेदारी की घटना है और यही कारण है कि इस तरह की घटनाओं पर लगाम लगानी है तो ऐसे मामलों में सरकार व न्याय व्यवस्था को स्वयं प्रसंज्ञान लेकर दोषियों को ना केवल कठघरे में खड़ा किया जाना चाहिए बल्कि सजा के अंजाम तक पहुंचाया जाना जरूरी है। आयोजकों द्वारा सुरक्षात्मक कदम नहीं उठाना, प्रशासन से अनुमति नहीं लेना, पुलिस प्रशासन, रेलवे प्रशासन, फायर बिग्रेड, एंबुलेंस आदि की व्यवस्था सुनिश्चित नहीं करना अपने आप में गंभीर है। ऐसे में आवश्यक इंतजाम करने की जिम्मेदारी भी आयोजकों की हो जाती है। सबसे बड़ी बात यह कि मुख्य अतिथि तय समय सीमा पर जाने के स्थान पर लोगों के जुटने और अपने भाषण के चक्कर में लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ करने तक नहीं चूकते। और संवेदनशीलता की तो इंतहा हो गई कि घटना के बाद मौके पर रुक कर राहत कार्य को नेतृत्व देना तो दूर उसकी जगह पर रेलवे या दूसरे पर आरोप लगाते हुए शर्म भी नहीं आ रही। उन्हें आखिर कब शर्म आएगी, यह भविष्य के गर्भ में है।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

औषधीय गुणों से भरपूर : लहसुन

डॉ. श्याम मनोहर व्यास

लहसुन अपनी अप्रिय गंध के कारण बदनाम है। कई व्यक्ति 'लहसुन' व प्याज का नाम लेते ही नाक सिकोड़ बैठते हैं और सब्जी में इसके उपयोग से अपने को वंचित करते हैं।

लहसुन स्वास्थ्यवर्द्धक एवं औषधीय गुणों से भरपूर है। हृदय रोगियों के लिए यह रामबाण औषधि है। उदयपुर के डॉ. अरूण बोर्दिया ने अपने अनुसंधान कार्य से यह सिद्ध किया था कि 'लहसुन' की कलियाँ हृदय रोग से बचाव करती हैं। लहसुन एक अत्यंत गुणकारी, पौष्टिक, उत्तेजक, प्रतिरोधक और अनेक रोगों को नष्ट करने वाला रसायन है। अंग्रेजी में इसे गार्लिक, बंगला में रशुन, फारसी में शिर तथा गुजराती में लसण कहा जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम एलियम सेटिवम है। भारत में प्राचीनकाल से ही इसे खाने एवं औषधि के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। आयुर्वेद के ग्रंथ 'संयुक्त संहिता' के अनुसार इसमें निम्न गुण पाए जाते हैं–

हृदोगजीर्ण स्वर कुक्षिशूला
विबंध जुलमारू
चिकाशशाफान।
दुनाय कुष्ठनलसानजंतु
समीकरण श्वासन फांश्च
हति।।

(अर्थात् लहसुन हृदय रोग, जीण ज्वर, उदर शूल, कब्ज, गांठ, अरुचि, खाँसी, शोध, बवासीर, कुष्ठ रोग, कृमि रोग तथा वायु संबंधी रोगों में इसका सेवन लाभदायक होता है।)

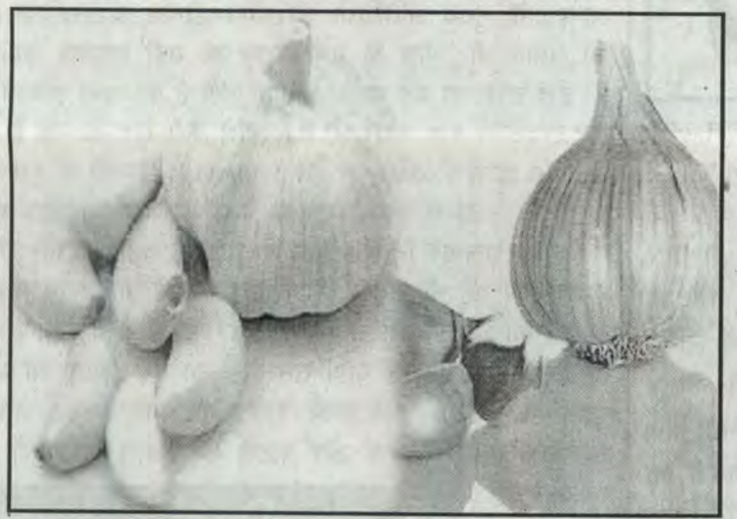

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार लहसुन में एक ऐसा क्रियाशील तत्व विद्यमान रहता है, जो रक्त धमनियों में वसा के जमाव को रोकता है। भारत में यह सब जगह बोया जाता है, पर महाराष्ट्र में इसकी पैदावार काफी होती है। लहसुन के बीज नहीं होते। भाद्र माह या आश्विन मास (क्वार) में इसकी कलियाँ रोपकर इसकी बुआंई की जाती है। रेतीली, अच्छे निथार वाली जमीन लहसुन की फसल के लिए अधिक अनुकूल होती है। इसकी दो किस्में हैं–सफेद और लाल। गुणों में दोनों समान हैं। इसका तेल लकवे तथा वात रोगों में उपयोगी है।

वैद्यराज सुश्रुत कहते हैं–विधाति वायो न द्रव्यं लशुनात् परम्। (अर्थात् वायु रोग में लहसुन के समान कोई और औषधि नहीं है) इसमें वायु को नष्ट करने वाली शक्ति है। आयुर्वेद के अनुसार यदि लहसुन का नियमित रूप से सेवन किया जाए तो व्यक्ति निरोगी, ऊर्जावान एवं दीर्घजीवी होता है। यह बुद्धि, वीर्य, पुरुषत्व एवं आयु को बढ़ाता है। शीत–ऋतु एवं वर्षा ऋतु में इसका मुख्य रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।

रासायनिक विश्लेषण : प्रति १०० ग्राम लहसुन में आर्द्रता ६२ प्रतिशत, प्रोटीन ६.३६ प्रतिशत, वसा ०.१०६, खनिज तत्व १६, रेशा ०.८६ एवं कार्बोहाइड्रेट २६.८६ प्रतिशत होता है। इसके अलावा इसमें फास्फोरस, आयोडीन, सल्फर, क्लोरीन, कैल्शियम, लौह तत्व भी न्यूनाधिक मात्रा में मौजूद रहते हैं। विटामिन ए, बी, सी भी पाए जाते हैं। इसका कैलोरिक मूल्य १४६ है।

लहसुन के औषधीय उपयोग

हृदय रोग : नवीनतम अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि लहसुन दिल के दौरे को रोक सकता है। कोलोजन (अमेरिका) विश्वविद्यालय के डॉ. हन्सरयूटर का कथन है कि लहसुन रक्त ध मनियों में जमा कोलेस्ट्रॉल को हटाता है, धमनियों को कठोर होने से रोकता है। अच्छे कोलेस्ट्रॉल (भ्क्स) का निर्माण करता है व बुरे कोलेस्ट्रॉल (स्क्स) को कम करता है। उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है। स्वस्थ व्यक्ति का रक्तचाप १२०/८० होना चाहिए। लहसुन में 'डाईएसाइड डाईसल्फाइड' नामक तत्व पाया जाता है, जो हृदय रोग से बचाव करता है। इस तत्व के कारण ही लहसुन से गंध आती है।

गठिया रोग : गठिया रोग में भी लहसुन का उपयोग करने से राहत मिलती है।

चर्म रोग : लहसुन को चेहरे पर मलने से दाग, मुँहासे आदि दूर होते हैं।

उदर रोग : लहसुन पाचनतंत्र को भी ठीक करता है। यह आँतों में विद्यमान विषैले कीटाणुओं को नष्ट करता है। पेट दर्द, अतिसार में भी यह लाभप्रद है। इसके लिए लहसुन के कैप्सूल भी काम में लिए जा सकते हैं।

यौन दुर्बलता : लहसुन हानिरहित कामोत्तेजक है। अमेरिका के डॉ. रॉबिंसन की मान्यता है कि लहसुन यौन दुर्बलता को दूर करता है।

खाने में अरुचि : अगर व्यक्ति या रोगी की भोजन में अरुचि हो गई हो, तो लहसुन, अदरक तथा सेंधा नमक की चटनी बनाकर सेवन करें, अरुचि दूर हो जाएगी।

घाव, चकत्ते आदि : लहसुन को घाव, अल्सर, चकत्ते आदि पर लगाने से लाभकारी परिणाम मिलता है। लहसुन का रस तीन भाग पानी के साथ लोशन के रूप में घाव वाले स्थान पर लगाने से राहत मिलती है।

अन्य : इसकी कली चबाने से खाँसी में लाभ मिलता है। कफ का निष्कासन करता है। इसकी कलियाँ घी में तलकर सेवन करने से अस्थि रोग दूर होता है, हड्डियाँ मजबूत होती हैं। इसे पीसकर गाय के घी और गर्म दूध में मिलाकर पीने से क्षय रोग दूर होता है। इस प्रकार लहसुन औषधीय गुणों से भरपूर है।

मशरूम के फायदे

पर्वतीय क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, हिमाचल, जम्मू–कश्मीर, चंडीगढ़, पंजाब, महाराष्ट्र व गुजरात में मशरूम की खेती होती है। मशरूम स्वादिष्ट ही नहीं, अत्यंत गुणकारी भी होता है। मशरूम की सब्जी सभी खाना पसंद करते हैं, लेकिन बहुत कम स्त्री–पुरुष मशरूम के गुणों से परिचित होते हैं। इसकी स्वादिष्ट सब्जी ही नहीं बनती, बल्कि इससे अनेक रोग–विकारों का निवारण भी किया जाता है। मशरूम की ३००० किस्में पाई जाती हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने १६० किस्मों को ही सेवन के लिए गुणकारी बताया है, शेष किस्में विषैली होती हैं और स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती हैं। वर्षा के मौसम में गाँवों के बाहर, नगरों में, खाली पड़े मैदानों में, कूड़े के ढेरों पर मशरूम स्वयं उग आते हैं। कूड़े के ढेरों के आसपास उगे मशरूम विषैले होते हैं। 'जनसाधारण में मशरूम को कुकुरमुत्ता भी कहा जाता है।

मशरूम की आकृति छतरी के समान होती है। इसकी सब्जी बनाकर खाने से शरीर को शक्ति मिलती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसमें विटामिन ए व दूसरे खनिज तत्व अधिक मात्रा में होते हैं। मशरूम खाने से नेत्र ज्योति प्रबल होती है। ताजे मशरूम में ६० प्रतिशत तक जल की मात्रा होती है। इसे सुखाकर सेवन करने पर भी इसके पौष्टिक व खनिज तत्व बने रहते हैं। इसमें वसा ०.६५ प्रतिशत, प्रोटीन ३१.६४ प्रतिशत और कार्बोहाइड्रेट ७.२४ प्रतिशत होते हैं। इनके अतिरिक्त मशरूम में फॉस्फोरस ०.१५ प्रतिशत, लौह तत्त्व १६.५ प्रतिशत, तांबा १.३५ प्रतिशत पी.पी.एम. पोटेशियम ०.१५ प्रतिशत और कैल्शियम ०.२४ प्रतिशत की मात्रा में होते हैं। इसमें विटामिन सी ०.५२ मिली ग्राम और विटामिन बी ०.१२ मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम मशरूम में होते हैं। इसमें विटामिन कॉम्पलेक्स ग्रुप के राइबोफ्लेबिन, फोलिक अम्ल, नियासिन आदि पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इन खनिज तत्त्वों व विटामिनों के कारण गर्भावस्था में स्त्रियों को मशरूम की सब्जी खाने से बहुत लाभ होता है। १०० ग्राम मशरूम की सब्जी खाने से शरीर को ३१० कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। विशेषज्ञों ने परीक्षण से ज्ञात किया है कि मशरूम में एक विशेष प्रकार की शर्करा होती है, जो शरीर में पाचन क्रिया को तीव्र करती है। इसके सेवन से भोजन जल्दी पच जाता है। इससे शरीर को भरपूर शक्ति मिलती है।

मशरूम में एमिनो एसिड्स होते हैं। इसके सेवन से शरीर को प्रोटीन भरपूर मात्रा में मिलता है। शरीर में प्रोटीन की कमी वाले बच्चों को मशरूम की सब्जी खिलाने से बहुत लाभ होता है। दालों व अनाज के प्रोटीन की अपेक्षा मशरूम के प्रोटीन जल्दी पच जाते हैं। भोजन में पौष्टिक तत्त्वों की कमी होने से शरीर में रक्त का निर्माण नहीं होता हो, तो स्त्री–पुरुष रक्ताल्पता के शिकार बनते हैं। रक्ताल्पता (एनीमिया) से पीड़ित स्त्री–पुरुष को मशरूम के सेवन से बहुत लाभ होता है। इसमें उपस्थित विटामिन और खनिज तत्त्व आयरन रक्त निर्माण करके, रक्ताल्पता का निवारण करते हैं। इसकी सब्जी बनाकर खाने से शारीरिक निर्बलता नष्ट होती है। इसका सूप बनाकर सेवन करने से शरीर में रक्त का निर्माण होता है। इससे स्त्रियों को फोलिक अम्ल एवं विटामिन सी मिलता है। विशेषज्ञों ने परीक्षणों से ज्ञात किया है कि मशरूम में अनेक औषधीय तत्त्व होते हैं। अतः इससे मध ुमेह रोग और उच्च रक्तचाप के लिए गुणकारी औषधियाँ बनाई जाती हैं। इसमें वसा और कार्बोहाइड्रेट तत्त्व अल्प मात्रा में होते हैं। इसलिए मशरूम के सेवन से स्थूलता (मोटापा) की विकृति नहीं होती है। मधुमेह रोगी भी मशरूम का सेवन कर सकते हैं। मशरूम हृदय रोगों से भी सुरक्षित रखता है। इसके सेवन से शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा नियंत्रित रहती है। इसमें उपस्थित वसा में इगोस्टेटॉल नामक एक ऐसा तत्त्व होता है, जो शरीर में पहुँचकर विटामिन डी में परिवर्तित हो जाता है। इस तत्त्व से विटामिन डी की कमी से उत्पन्न होने वाले रोगों का निवारण होता है। आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार मशरूम के सेवन से कैंसर रोग से सुरक्षा होती है, क्योंकि मशरूम में कैंसर विरोधी तत्त्व होते हैं। उन्माद रोगों में भी मशरूम बहुत लाभ पहुँचाते हैं।

शशि भूषण शलभ

लोक आस्था का महापर्व 'छठ'

✍ मुन्ना कुमार शर्मा

भारत की विविध संस्कृति का एक अहम अंग यहां के पर्व हैं। भारत में ऐसे कई पर्व हैं जो बेहद कठिन माने जाते हैं और इन्हीं पर्वों में से एक है छठ पर्व। छठ को सिर्फ पर्व नहीं महापर्व कहा जाता है। चार दिनों तक चलने वाले इस पर्व में व्रती को लगभग तीन दिन का व्रत रखना होता है जिसमें से दो दिन तो निर्जली व्रत रखा जाता है। आइए आज के इस अंक में जानें छठ के बारे में कुछ विशेष बातें और छठ व्रत कथा।

क्या है छठ

छठ पर्व षष्ठी का अपभ्रंश है। कार्तिक मास की अमावस्या को दीवाली मनाने के तुरंत बाद मनाए जाने वाले इस चार दिवसीय व्रत की सबसे कठिन है और महत्वपूर्ण रात्रि कार्तिक शुक्ल षष्ठी की होती है। इसी कारण इस व्रत का नामकरण छठ व्रत हो गया।

छठ व्रत कथा

मार्कण्डेय पुराण में इस बात का उल्लेख मिलता है कि सृष्टि की अधिष्ठात्री प्रति देवी ने अपने आप को छह भागों में विभाजित किया है और इनके छठे अंश को सर्वश्रेष्ठ मातृ देवी के रूप में जाना जाता है, जो ब्रह्मा की मानस पुत्री और बच्चों की रक्षा करने वाली देवी हैं। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को इन्हीं देवी की पूजा की जाती है। शिशु के जन्म के छह दिनों के बाद भी इन्हीं देवी की पूजा करके बच्चे के स्वस्थ, सफल और दीर्घ आयु की प्रार्थना की जाती है। पुराणों में इन्हीं देवी का नाम कात्यायनी मिलता है, जिनकी नवरात्र कीं षष्ठी तिथि को पूजा की जाती है.

सीता जी ने भी रखा था छठ व्रत

माना जाता है कि छठ पर्व बहुत ही पुराना है। इसका वर्णन रामायण काल से लेकर महाभारत काल तक में होता है। किंवदंति के अनुसार ऐतिहासिक नगरी मुंगेर के सीता चरण में कभी मां सीता ने छह दिनों तक रह कर छठ पूजा की थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार १४ वर्ष वनवास के बाद जब भगवान राम अयोध्या लौटे थे तो रावण वध के पाप स

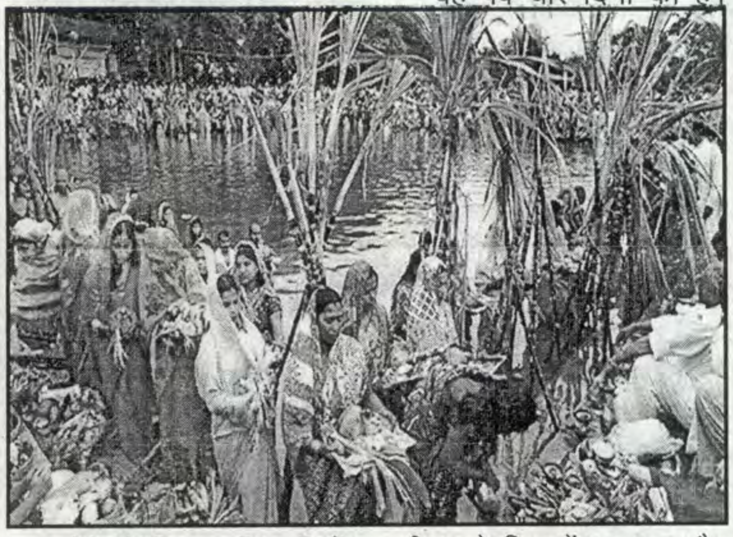

मुक्त होने के लिए ऋषि–मुनियों के आदेश पर राजसूर्य यज्ञ करने का फैसला लिया। इसके लिए मुग्दल ऋषि को आमंत्रण दिया गया था, लेकिन मुग्दल ऋषि ने भगवान राम एवं सीता को अपने ही आश्रम में आने का आदेश दिया। ऋषि की आज्ञा पर भगवान राम एवं सीता माता स्वयं यहां आए और इसके पूजा–पाठ के बारे में बताया गया। मुग्दल ऋषि ने मां सीता को गंगा छिड़क कर पवित्र किया एवं कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि को सूर्यदेव की उपासना करने का आदेश दिया। यहीं रह कर माता सीता ने छह दिनों तक सूर्यदेव भगवान की पूजा की थी। छठ पूजा के इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो इसका प्रारंभ महाभारत काल में कुंती द्वारा सूर्य की आराधना व पुत्र कर्ण के जन्म के समय से माना जाता है।

छठ क्यूं है महापर्व

छठ को महापर्व इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि सूर्य ही एकमात्र प्रत्यक्ष देवता हैं और छठ पूजा का वर्णन पुराणों में भी मिलता है। अथर्ववेद में छठ पर्व का उल्लेख है जो इसकी महानता और प्राचीनता को दर्शाता है। यह एकमात्र पर्व है जिसमें उदयमान सूर्य के साथ–साथ अस्ताचलगामी सूर्य को भी अर्घ्य दिया जाता है। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि जीवन में हमें सिर्फ उन्हें ही सम्मान नहीं देना चाहिए जो आगे बढ़ते हैं बल्कि समय आने पर उनका भी साथ देना चाहिए जो हमसे पीछे छूट गए है या जिनका महत्व कम हो गया हो।

कैसे रखा जाता है व्रत

यह पर्व चार दिनों का है। व्रती पहले दिन सेंधा नमक और घी से बनी कद्दू की सब्जी और अरवा चावल प्रसाद के रूप में खाते हैं। अगले दिन से उपवास आरंभ होता है. इस दिन को खरना कहते हैं। रात में खीर बनती है। व्रतधारी रात में यह प्रसाद लेते हैं। इस पर्व में पवित्रता का ध्यान रखा जाता है। इस दौरान लहसुन, प्याज खाना वर्जित है। जिन घरों में यह पूजा होती है, वहां भक्तिगीत गाए जाते हैं।

छठ पर्व के पहले दिन को खाए नहाय खाय कहा जाता है यानि लोग उस दिन खा लेते हैं और उसके बाद दो दिन का व्रत रखते हैं जिसमें आखिरी दिन निर्जला व्रत होता है। पर्व के पहले दिन महिलाएं स्नानादि करने के बाद चावल, लौकी और चने की दाल का भोजन करती हैं और देवकरी में पूजा का सारा सामान रख कर दूसरे दिन आने वाले व्रत की तैयारी करती हैं।

छठ पर्व के लिए क्या है कड़े नियम

छठ पर्व पर दूसरे दिन यानि खरना पर पूरे दिन का व्रत रखा जाता है और शाम को गन्ने के रस की बखीर (कुछ जगह लोग गुड़ से खीर बनाते हैं वह भी बखीर ही मानी जाती है) बनाकर देवकरी में पांच जगह कोशा(मिट्टी के बर्तन) में बखीर रखकर उसी से हवन किया जाता है। बाद में प्रसाद के रूप में बखीर का ही भोजन किया जाता है व सगे संबंधियों में इसे बांटा जाता है। इस दिन का प्रसाद यानि खीर और रोटी बेहद स्वादिष्ट और सेहतमंद होता है। षष्ठी यानि बड़का छठ के दिन सुबह से ही नदी या तालाबों के घाटों को सजाने–संवारने का काम शुरू हो जाता है। केले के थम्ब, आम के पल्लव, अशोक के पत्ते को मूंज की रस्सी के साथ बांधकर पूरे व्रत स्थल की सजावट करते हैं। व्रत सामग्री में खासकर बांस से बने दऊरा–सुपली, ईख, नारियल, फल–फूल, मूली, पत्ते वाले अदरक, बोरो, सुथनी, केला, आटे से बने ठेकुआ आदि होते हैं जिन्हें एक लकड़ी के डाले में रखा जाता है जिसे लोग दऊरा या ढलिया या बंहगी भी कहते हैं।

छठ का गीत

शाम के अर्घ्य के दिन दोपहर बाद से ही बच्चे, महिलाएं, बुजुर्ग और नौजवान नए वस्त्रों में सुशोभित होकर घाट की ओर प्रस्थान करते हैं। घर के पुरुष सिर पर चढ़ावे वाला दऊरा लेकर आगे–आगे चलते हैं। पीछे–पीछे महिलाएं गीत गाती व्रत स्थल को जाती हैं। वहां पहुंचकर पहले गीली मिट्टी से सिरोपता बनाती हैं। अक्षत–सिंदूर, चंदन, फूल चढ़ाकर वहां एक अर्घ्य रखकर छठी मइया की सांध्य पूजा का शुभारम्भ करती हैं। फिर व्रती नदी में पश्चिम की ओर मुंह करके खड़े होते हैं और भगवान दिवाकर की आराधना करते हैं।

वैसे तो लोग इस दिन घाट पर अपनी मर्जी और सामर्थ्य से फल ले जाते हैं लेकिन विधिवत रूप से एक सूप में नारियल कपड़े में लिपटा शेष पृष्ठ 11 पर

चीन से कैलास मानसरोवर की मांग करे भारत

सत्ता में आने के बाद सैफई में विष्णु मंदिर बनाने की घोषणा कर पार्टी का धार्मिक चेहरा उभारने की कोशिश में जुटे पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष में मंगलवार को एक और मुद्दा उछाला। उन्होंने कहा कि कैलास मानसरोवर भारत की धार्मिक भावना से जुड़ा है। इसका पौराणिक महत्त्व है। हर वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु वहां तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। भारत सरकार को चीन से कैलास मानसरोवर सौंपने की मांग करनी चाहिए।

टिप्पणी

१. पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश की उपरोक्त मांग विचित्र और हास्यास्पद है।

२. उन्हें मालूम होना चाहिए कि चीन विस्तार वादी प्रवृति की नीयत रखता है और पड़ोसी देशों की जमीन छीनने में लगा रहता है।

३. वह तो तवांग/ अरुणाचल प्रदेश को लेने के प्रयास में है।

४. साठ के दशक में उसने अक्षयचिन में सड़कें बनाकर भारत की १४००० वर्ग मील भूमि पर अवैध कब्जा कर लिया था। पहले आप उसे लेने का प्रयास करें।

५. १६४७ तक तिब्बत की डाक सेवा–टेलीग्राम–टेलीफोन सेवा भारत द्वारा संचालित होती थी और भारत का एक सैन्य अधिकारी तिब्बत में रहता था।

६. यदि लौहपुरुष सरदार पटेल १६४७ में स्वतन्त्र भारत के प्रधान मंत्री बन गए होते तो तिब्बत का विलय भारत में हो सकता था तब कैलास मानसरोवर स्वाभाविक रूप से भारत का हिस्सा हो जाता।

७. दुर्भाग्य से, अदूरदर्शी नेहरू ने, सरदार पटेल की मृत्यु के बाद, चीन के दबाव में आकर, तिब्बत को चीन का स्वायत्तशासी राज्य की मान्यता देकर भयंकर गलती की और डाक व्यवस्था चीन को बेच दी।

८. इस प्रकार तिब्बत पर भारत का अप्रत्यक्ष रूप से भी कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

देवभूमि भारत

✍ प.पू.मा.स. गोलवलकर

अपने देश के उत्तर में हिमालय और बाकी तीन दिशाओं में महासमुद्र है। इस प्रकार नैसर्गिक सीमाओं से सुबद्ध भूखण्ड हमारे राष्ट्र का आधार है। इस भूखण्ड को हिन्दू पावित्र मानता है। हिन्दू–समाज के लिए इस भूखण्ड में हिमालय स्वयं देवता स्वरूप है। यहाँ के कवियों ने देवात्मा कहकर हिमालय की स्तुति की है। हिमालय के उत्तर में कैलाश, मानसरोवर अपने ही तीर्थस्थान हैं। अमरनाथ इत्यादि श्रेष्ठ स्थान इसी अपनी भूमि के हिमालय के ही परिसर में है। वहाँ से लेकर दक्षिण में हमें समुद्र के तट पर एक ओर कन्याकुमारी का पवित्र स्थान तो दूसरी ओर रामेश्वरम् का श्रेष्ठ तीर्थस्थान दिखेगा। हिन्दू–समाज के जितने भी पन्थ हैं उन सबके पवित्र क्षेत्र इधर–उधार सर्वदूर फैले हुए हैं, और वहीं की मृत्तिका के कण–कण को हिन्दू पवित्र मानता है। यहाँ के वन–पर्वतों को वह पूजनीय मानता है। जड़–चेतन सभी उसके लिए भगवान का स्वरूप हैं।

प्राचीन काल में अपने पूर्वजों ने कहा है कि संसार भर में भिन्न-भिन्न भूमियाँ हैं, अनेक देश हैं, परन्तु जहाँ पर सत्कर्म का उचित फल, स्वर्ग या मोक्ष के रूप में मिल सकता है, ऐसी एक ही भूमि संसार में है, वह यानि भारतभूमि। इसमें किसी पौधे या कीट का जन्म पाना भी भाग्य की बात है और मनुश्य जन्म पाने के बराबर दूसरा भाग्य नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि यदि देवताओं को भी मोक्ष प्राप्ति या ब्रह्म-प्राप्ति की इच्छा हो तो उनको स्वर्ग का त्याग करके मनुष्य के रूप में इस भारतभूमि में जन्म लेना पड़ेगा, यहाँ तपस्या करनी पड़ेगी, तो क्रम से उनकी मुक्ति होगी। इस प्रकार इस भूमि की पवित्रता की श्रेष्ठतम धारणा अपने यहाँ चली आ रही है। इसलिए आधुनिक काल के श्रेष्ठ योगी अरविन्द ने सब लोगों को सचेत करते हुए कहा कि ''इसे मिट्टी मत मानो यह चेतनामयी देबता है, आदिशक्ति भगवती दुर्गा का यह मूर्त-स्वरूप ही अपने लिए प्रकट हुआ है।'' भूमि के प्रति इस प्रकार की पवित्रतम धारणा इस हिन्दू-समाज की है।

इस भूमि को पवित्र, अपनी माता, पिता, रक्षक, गुरू, सर्वस्व तथा जगत के मूलाधार के रूप में मानने वाला यह पुत्र रूप हिन्दू–समाज है। यही हिन्दू वेदकाल से गर्जना करता हुआ आया है कि ये मेरी माता और मै इसका पुत्र हूँ ''माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः''। इस हिन्दू–समाज जीवन की विगत अनेक शताब्दियों की स्थिति एक सर्वव्यापी धर्म जिसमें अपने देश के सभी छोटे–बड़े पन्थ समाविष्ट होते हैं, और उस धर्म के अनेक संस्कारों से सुसंस्कृत बने हुए अंतः करण होने के कारण निर्माण हुआ एक अत्यन्त श्रेष्ठ, पवित्रतम जीवनप्रवाह, जो अपनी संस्कृति कही जाती है, अपने सबके लिए समान है। अपना एक इतिहास है। श्री रामचन्द्र आदि राष्ट्रपुरुषों से लेकर अर्वाचीन काल के श्रेष्ठ त्यागमय पवित्र जीवन व्यतीत करने वाले राष्ट्र भक्तों तक एक ही मालिका अपने मार्गदर्शन के रूप में खड़ी है, जिसके सामने हम लोग नतमस्तक होकर जीवन के प्रत्येक पहलू में उनसे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

इतिहास बताता है कि हम लोगों ने एक समय बड़े साम्राज्य का निर्माण किया था। सारे जगत के भिन्न-भिन्न देशों में जाकर, अपने धर्म की ध्वजा फहरायी थी। फिर काल के चक्र में नेमिक्रम की जो गति रहती है उसके कारण, अवनति का कालखंड उत्पन्न होकर अनेक दृष्टियों से हमें पराजय और सभी प्रकार की निकृष्ट दास्य अवस्था भी स्वीकार करनी पड़ी। इन सब सुखों के, दुखों के प्रसंग अपने में से प्रत्येक को सचेत करते हैं। प्रत्येक सोचता है कि इन सब सुख–दुखों के आधात मेरे शरीर पर, मेरे अंतः करण पर हैं, उनके संस्कार मेरे जीवन पर हैं। वह प्रत्येक संस्कार अपने हृदय में विद्यमान है।

जहाँ तक सुख साधनों की उपलब्धि का प्रश्न है भारत वर्ष एक भाग्यशाली देश है। भारत भूमि जैसी भूमि दुनियाँ में असम्भव है, इस सम्बन्ध में जो विदेशी यात्री आते रहे हैं, उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह देश अद्वितीय है। अनेक वर्ष पूर्व की बात है, उस समय देश गुलाम था। एक विदेशी यात्री जब भारत में भ्रमणार्थ आया, तब वह राज्य कर्ता के देश का होने के कारण एक विशेष प्रकार के अभिमान में डूबा हुआ था। परन्तु भारत–भ्रमण के उपरान्त उसने जो वृत्तांत प्रकाशित किया, उसमें भारत की महिमा गायी गयी। उसने कहा कि विश्व में जो–जो श्रेष्ठ, सुन्दर, अच्छा होने की इच्छा की जा सकती है वह सब भारत में दिखाई पड़ता है।

विश्व में सबसे उत्तम पर्वत है, गंगा जैसी नदी है जिसका पानी वर्षो रखे रहने के बाद भी खराब नहीं होता। इस भूमि में सभी प्रकार की उपज होती है। जलवायु भी विविध प्रकार की है। बर्फाच्छादित प्रदेश इस भूमि में है, तो रेगिस्तान भी यहाँ है। मूसलाधार वर्षा वाले स्थान यदि भारत में है तो ऐसे स्थान भी मिलेंगे जहाँ जल–वायु एकदम सूखी है। सब प्रकार की जलवायु अनेक ऋतु, उनमें होने वाली विविध प्रकार की उपज, वनस्पति, प्राणी आदि सबको मिलकर यह भूमि परिपूर्ण सुन्दर, अतीव आकर्षक दिखाई देती है। इस भूमि के गर्भ में कितने प्रकार की खनिज संपदा विद्यमान है इसका ठीक–ठीक ज्ञान हमें भी नहीं है। कुछ थोड़ा बहुत प्रयत्न करने पर लोगों का ऐसा अंदाज है कि पृथ्वी में जितने प्रकार के खनिज पदार्थ हैं वे सब भारत में विद्यमान हैं।

कुछ दिन पहले की बात है, ऐसा समाचार प्रसारित हुआ कि अपने देश में प्लेटिनम बहुत बड़े प्रमाण में प्राप्त हो सकता है। हम सभी जानते हैं कि प्लेटिनम स्वर्ण से भी मूल्यवान है। अणु विभाजन करने के लिए आधुनिक विज्ञान में जो दुर्लभ वस्तु आवश्यक होती है वह भी अपने देश में भरपूर मात्रा में है, ऐसा बताया जाता है। केवल खनिज पदार्थ ही नहीं अपितु इस देश की समुद्र संपदाभी बहुत विशाल है। अभी कुछ दिन पहले भारत के समुद्रों की रेत भर–भरकर विदेश ले जाई गयी। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह रेत बहुत मूल्यवान है और इस पर अधिक शोध करना चाहिए।

जिस प्रकार यह भूमि अत्यन्त समृद्ध है, उसी प्रकार परमात्मा की असीम कृपा से जनसंख्या में भी यह देश बहुत बड़ा है। विश्व में बुद्धिमान, पराक्रमी, शक्तिशाली, शील, चारित्र्ययुक्त व्यक्तियों का विचार यदि हम करें, तो हमें ऐसा दिखाई देगा कि भूतकाल में और वर्तमान काल में भी जैसे कर्तृत्ववान पुरुष भारत में हुए वैसे किसी भी देश में नहीं हुए।

एक उदाहरण है कुछ वर्ष पहले इतिहास के क्षेत्र में कई विद्वानों ने यह निर्णय करने के लिए कि विश्व में सबसे बड़ा सेनापति कौन हुआ एक प्रयत्न किया। विचार आमन्त्रित किये गए। सिकंदर का नाम आया। किसी ने जूलियस सीजर का नाम लिया। हनिबालल और नेपोलियन की भी चर्चा हुई। नेपोलियन को भी परास्त करने वाले का नाम लिया गया। विभिन्न विद्वानों के मत आमंत्रित करने पर जो निष्कर्ष प्रकाशित हुआ वह मैंने पढ़ा है। मुझे बहुत आश्चर्य और प्रसन्नता हुई कि अनेक विद्वानों ने अपना मत देते हुए इस बात का उल्लेख किया कि हमें केवल यूरोप के विख्यात सेनापतियों के ही चरित्रों को सामने रखकर विचार किया है, परन्तु यदि भारत में उत्पन्न हुए शिवाजी नाम के व्यक्ति का विचार करें तो दिखाई देगा कि विश्व के सेनापतियों में उन जैसा व्यक्ति दुर्लभ है। सेनापति, राज्यकर्ता, धर्मभक्त, चारित्र्यसम्पन्न, शील सम्पन्न, इन सब गुणों में वे किसी भी सेनापति से राई भर भी कम नहीं थे। उन्होंने कहा कि इस पुरुष जैसा अन्य व्यक्ति हुआ ही नहीं।

इतनी सब समृद्धि हमारे देश में विद्यमान है। फिर भी इतिहास पढ़ते समय आश्चर्य और दुःख में डूब जाते हैं कि विगत हजार–पन्द्रह सौ वर्षों में इस देश को दुर्दिन क्यूँ देखने पड़े? आक्रमणकारियों की छोटी–छोटी टुकड़ियों ने इस देश पर आक्रमण किये, लूट–पाट की, विनाश किया और ये सब करते–करते उनका साहस यहाँ तक बढ़ा कि उन्होंने यहाँ अपने राज्य भी प्रस्थापित कर लिए। इतना ही नहीं आसेतु हिमाचल अपना राज्य स्थापित करने की कामना से वे यहाँ प्रयत्न करते रहे। उनके इन प्रयन्तों को सफल बनाने के लिए हमारे देश के बड़े–बड़े पराक्रमी पुरुष लगे रहे। विदेशियों की गुलामी करने में ही उन्होंने अपने जीवन को कृतार्थ समझा। इन अनेक आक्रमणों से देश की सम्पत्ति नष्ट हुई। धर्म और संस्कृति का हास हुआ। प्रतिष्ठा पर आघात हुआ और स्वतन्त्रता भी चली गयी।

इतिहास की इन सब घटनाओं को देखने पर एक मूल प्रश्न उपस्थित होता है कि यह सब क्यों हुआ? श्रेष्ठ परम्परायुक्त, विपुल जनसंख्या, उत्कृष्ट समृद्धि प्राप्त करा दे सकने वाली भूमि, उस समृद्धि पर सम्पूर्ण समाज का जीवन सुखी और वैभवपूर्ण बनाने के लिए

शेष पृष्ठ 10 पर

भारत सदियों से विश्वगुरू था, है और रहेगा

साभार शिशु मंदिर संदेश

हजारों वर्ष पहले से ही हमारे ऋषि–मुनि विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान की खोज में रत रहते थे। उनका मस्तिष्क सृजनात्मक और बहुआयामी था। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्रों में संसार को उनकी कई महत्वपूर्ण देने है, जिसके लिए पूरा विश्व, समाज आज भी उनका ऋणी है।

गणित : विज्ञान की उन्नति विशेष रूप से गणित पर निर्भर है। अब्दुल–अल मसूदी एक अरबी विद्वान (६४३ ई.) ने भी यह माना है कि अंकलिपि का आविष्कार भारतीयों ने किया है। सौ (१००) के ऊपर की गणना भारतीय मस्तिष्क की ही देन है। यजुर्वेद संहिता (अध्याय १७ मन्त्र २) में तो १० खरब (एक पर १२ शून्य) तक की संख्या का उल्लेख है। जबकि यूनानी लोग दस हजार तक तथा रोमन लोग एक हजार तक की संख्या की जानते थे। आर्यभट्ट, महावीर, श्रीधर, श्रीपति, भास्कराचार्य आदि गणितज्ञों ने वर्गमूल निकालने की रीतियाँ बतलायी हैं। आर्यभट्ट ने अपनी पुस्तक 'आर्यभट्टीय' में जो रीति ४९९ई. में दी थी, वह यूरोप में १५वीं शताब्दी में पहुँच पाई। भारतीय मनीषियों को जोड़, घटाना, गुणा, भाग, वर्ग, घन और वर्गमूल आदि अष्टांग पद्धतियाँ ज्ञात थीं। वर्गमूल और घनमूल की ये दोनो रीतियाँ आठवीं शताब्दी के मध्य में भारतवर्ष से अरबों के पास पहुँची और उनके द्वारा अन्य देशों में गयी।

बीजगणित : भारतीयों ने बीजगणित में भी बड़ी दक्षता प्राप्त की थी। हरमन हेकल (एक पश्चिमी गणितज्ञ) तो भारतीय मनीषियों को ही बीजगणित का आदि रचयिता मानता है। ब्रह्मगुप्त (६२८ ई.) ने 'समीकरण' खोज निकाला। आर्यभट्ट ने वृत्त की परिधि और व्यास की निष्पत्ति का यथार्थ मान निकटतम चतुर्थ दशमलव अंक तक निकाला। मुहम्मद ईब्न मूसा ने ८२५ ई. में (पाई) का मान देते हुए लिखा है यह मान भारतीय ज्योतिषचार्यों का दिया हुआ है।

ज्योतिष : ज्योतिष के क्षेत्र में हिंदुओं ने संसार को अमूल्य रत्न भेंट किए। वेली का मत है कि ईसा के हजारों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषी वैज्ञानिक रूप से ग्रह–गणना करते थे। ये ग्रह भी पृथ्वी के समान सूर्य की परिक्रमा करते हैं और इनका परिक्रमण पथ वृत्ताकार नहीं प्रत्युत दीर्घ वृत्ताकार है। **'सूर्य सिद्धान्त ग्रंथं'** में स्पष्ट

ज्यामितिः : भारतीयों को ज्यामिति का विशेष ज्ञान था। यज्ञ में वेदियों को बनाने में ज्यामिति का प्रयोग पुरातन काल से चला आ रहा है। एक प्राचीन ग्रंथ **'शुल्वसूत्र'** में वर्ग–आयन बनाने की विधि दी हुई है। भुजा से कर्ण का सम्बन्ध, वर्ग के समान आयत, वर्ग के समान वृत्त आदि प्रश्नों का विचार इस ग्रंथ में किया गया है।

लैपलेस के मत में ईसा के ३००० वर्ष पूर्व भारतीय ज्योतिषाचार्य ग्रहों का स्थान एक विकल (समय का एक छोटा मान) तक निकाल लेते थे। सर विलियम जेम्स के अनुसार भारतीय मनीषी ईसा से ११९० वर्ष पूर्व ग्रहों की ठीक–ठीक गणना करने में समर्थ थे। ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन प्रारम्भिक वैदिक काल में भी होता था। काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश क्रति (एक सेकेण्ड के ३४०००)अंशों में से एक अंश के बराबर को भास्करांचार्य अपनी गणना में लाये हैं।

वैदिक ऋषि यह जानते थे कि सूर्य चन्द्र को प्रकाशित करता है। यह भी जानते थे कि चन्द्रमा २७ दिन में अपनी परिक्रमा पूरी करके फिर उसी स्थान में आ जाता है। ३० दिनों का मास तथा ३६५ दिनों का वर्ष मानते थे। पर जब देखा गया कि ३०-३० दिनो के १२ चान्द्रमासों से वर्ष के ३६५ दिन पूरे नहीं होते तो चन्द्र और सौर वर्षो का हिसाब ठीक रखने के लिए प्रति तीन वर्षों बाद एक मलमास जोड़ा गया।

पृथ्वी घूमती है इस कारण दिन और रात का भेद होता है। इस तथ्य को आज से लगभग १५०० वर्ष आर्यभट्ट ने जाना। इसके वर्षो बाद यूरोप में कॉपरनिकस के द्वारा इसका आविष्कार हुआ। आर्यभट्ट सूर्य और चंद्रग्रहणों के कारण जानते थे, इसमें कोई सन्देह नहीं है। उन्होंने यह भी कहा था कि चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों में अपना कोई प्रकाश नहीं है। सूर्य क प्रकाश से वे प्रकाशित होते हैं।

कहा गया है कि यदि पृथ्वी का आकार वृत्त न माना जाय तो इस कथन का कुछ अर्थ ही रह जायेगा कि सूर्योदय के पूर्व उषः काल होता है। पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल के विस्तार के सम्बन्ध में उनके विचार आधुनिक ज्योतिष शास्त्र से मिलते–जुलते हैं। वेदों में कहा गया है कि ब्रह्माण्ड अनंत है और इसमें अनेकों लोक हैं। कुछ लोगों के विज्ञानी अपनी तश्तरी जैसे आकार वाले विमानों से हमारी धरा पर उतरते हैं और कुछ अनुसंधान करके फिर चले जाते हैं। ऐसी उड़न तश्तरियाँ इधर तीन–चार सौ वर्षों के बीच पश्चिम के विभिन्न देशों में अनेकों बार देखी गयीं जो वैज्ञानिकों के लिए एक विस्मयकारी घटना है।

कुछ और जानने योग्य बातें

- ❖ त्रैराशिक का आविष्कार भारतीय गणितज्ञों ने किया।
- ❖ त्रिकोणमिति के क्षेत्र में भारतीय मनीषियों ने जो काम किया है, वह बेजोड़ और मौलिक है। उन्होंने ज्या, कोटिज्या और उत्क्रमज्या आविष्कृत की।
- ❖ आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, श्रीधर, पद्मनाभ और भास्कराचार्य बीजगणित के ऐसे–ऐसे प्रश्न हल करते थे, जैसे १७वीं और १८वीं शताब्दी के पहले तक यूरोप के गणितज्ञ नहीं कर पाते थे।
- ❖ भास्कराचार्य की 'लीलावती' में यह प्रमाणित किया गया है कि जब किसी अंक को शून्य से भाग दिया जाता है, तब उसका फल अनंत अंक आता है।

शेष पृष्ठ 10 पर

पर्यावरण पर हावी मनुष्य-जनित प्रदूषण

✍ मुरलीधर वैष्णव

भारतीय संस्कृति समस्त चराचर के प्रति शांति व शुभ चिन्तन की पक्षधर रही है। इसके अनुसार पृथ्वी का सजीव और निर्जीव अर्थात् प्रत्येक कण चेतन स्वरूप है। अथर्ववेद १२:१ के पृथ्वी सूक्त के अनुसार पृथ्वी को हमने भूदेवी कहकर, माँ की तरह इसकी वन्दना की है। चूहे से लेकर शेर और मोर से लेकर गरुड़ जैसे पक्षियों को देवताओं का वाहन बनाकर उन्हें गरिमा प्रदान की है। पीपल, नीम, वटवृक्ष, तुलसी आदि हर पेड़–पौधों में देवत्व के दर्शन करने की सीख दी है। गंगा, यमुना, नर्मदा आदि नदियों को माता तथा हिमालय व गोवर्धन जैसे पर्वतों को देवस्वरूप पूजा है।

करीब साढ़े चार अरब वर्ष पुराने इस प्यारे पृथ्वी ग्रह का करीब सत्तर प्रतिशत भाग सामुद्रिक खारे जल से घिरा है। शेष तीस प्रतिशत भू–भाग के ६.०४ भाग में जंगल अवश्य हैं, लेकिन इनकी अंधाधुंध कटाई एक गंभीर चिंता का कारण है। आज इस पृथ्वी पर करीब ७ अरब मानव जनसंख्या है। यहाँ ५६८११ प्रकार के पशु–पक्षी विचरण करते हैं। १२०३७५ प्रकार के तो केवल कीट–पतंगे ही हैं और तीन लाख किस्म के पेड़–पौधे हैं। लेकिन पर्यावरण में बढ़ता प्रदूषण और पृथ्वी का अंधाधुंध दोहन हमें तेजी से विनाश की ओर धकेल रहा है। औद्योगिक प्रगति के नाम पर कार्बन उगलती चिमनियों व धुएँ से ओजोन छेद बढ़ता ही जा रहा है। मानव–कारित तापमान वृद्धि से ग्लेशियर पिघलकर समुद्र जल स्तर बढ़ता ही जा रहा है। दूसरी ओर वैज्ञानिक परीक्षणो के नाम पर करोड़ों पशु–पक्षियों को विभिन्न प्रयोगशालाओं में क्रूर यातना देकर मारा जा रहा है। भू–गर्भ से जल, खनिज, रसायन आदि के निरन्तर अकूत दोहन से पृथ्वी विचलित है। मौसमतंत्र बिगड़ रहा है। भूकंप, सुनामी की घटनाएँ बढ़ी हैं। आज पूरे संसार में इतने अणु–परमाणु व हाइड्रोजन बम हैं कि पृथ्वी को एक बार नहीं बीस बार नष्ट किया जा सकता है।

पेयजल संकट सबसे भयावह है। पृथ्वी का ६७.०४ प्रतिशत जल समुद्रों के खारे पानी से भरा है। केवल ०.८ प्रतिशत जल ही पीने योग्य है, जो हमें उपलब्ध है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार संसार का हर छठा आदमी पेयजल सुविधा से वंचित है। नदियों में हजारों की तादाद में गंदे व रासायनिक द्रवों के नालों से प्रदूषण फैलाया जा रहा है। आशंका यह भी जताई जा रही है कि तीसरा विश्वयुद्ध पीने के पानी को लेकर ही होगा। हमारे देश में जंगलों, नदियों, पर्वतों और पशु–पक्षियों का इतना बुरा हाल क्यों है, इसका मूल कारण क्या है? आज से पचास–साठ साल पहले तक भी हमारी जीवन–पद्धति प्रकृति को मित्र, पोषक और शुभकारी मानने में थी। भोगलिप्सा और लोभवृत्ति के कारण चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। आदमी येन–केन–प्रकारेण रातोंरात करोड़पति–अरबपति बनना चाहता है। इसके लिए भ्रष्टाचार के नए अपकीर्तिमान बन रहे हैं। इधर योजनाएँ बनती हैं, उधर मिलीभगत से जंगल के जंगल साफ हो रहे हैं। बाघ, शेर, हाथी, गेंडे जैसे महत्वपूर्ण पशु और मोर जैसे राष्ट्रीय पक्षी तक के अवैध शिकार हो रहे हैं। अवैध खनन की तो भयावह स्थिति है। ऐसे माहौल में हम बच्चों और विद्यार्थियों के समक्ष कैसी नैतिक शिक्षा और आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं। पश्चिम से आयातित भोगलिप्सावृत्ति ने हमारे

शेष पृष्ठ 11 पर

गोवर्धन पूजा पर विशेष

साभार - सत्यचक्र

गोवर्धन अथवा अन्नकूट हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। दीपावली के दूसरे दिन सायंकाल ब्रज में गोवर्धन पूजा का विशेष आयोजन होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने आज ही के दिन इन्द्र का मानमर्दन कर गिरिराज पूजन किया था। इस दिन मंदिरों में अन्नकूट किया जाता है। सायंकाल गोबर के गोवर्धन बनाकर पूजा की जाती है।

धार्मिक मान्यता : वेदों में इस दिन वरूण, इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं की पूजा का विधान है। इसी दिन बलि पूजा, गोवर्धन पूजा, मार्गपाली आदि होते हैं। इस दिन गाय–बैल आदि पशुओं को स्नान कराकर, फूल माला, धूप, चंदन आदि से उनका पूजन किया जाता है। यह ब्रजवासियों का मुख्य त्योहार है। अन्नकूट या गोवर्धन पूजा भगवान कृष्ण के अवतार के बाद द्वापर युग से प्रारम्भ हुंई। उस समय लोग इन्द्र भगवान की पूजा करते थे तथा छप्पन प्रकार के भोजन बनाकर तरह–तरह के पकवान व मिठाइयों का भोग लगाया जाता था। ये पकवान तथा मिठाइयाँ इतनी मात्रा में होती थीं कि उनका पूरा पहाड़ ही बन जाता था।

अन्नकूट : अन्नकूट एक प्रकार से सामूहिक भोज का आयोजन है जिसमें पूरा परिवार और वंश एक जगह बनाई गई रसोई से भोजन करता है। इस दिन चावल, बाजरा, कढ़ी, साबुत मूंग, चौड़ा तथा सभी सब्जियाँ एक जगह मिलाकर बनाई जाती हैं। मंदिरों में भी अन्नकूट बनाकर प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है।

पूजन विधि : १. इस दिन प्रातः गाय के गोबर से गोवर्धन बनाया जाता है। अनेक स्थानों पर इसकी मनुष्याकार बनाकर पुष्पों, लताओं आदि से सजाया जाता है। शाम को गोवर्धन की पूजा की जाती है। पूजा में धूप, दीप, जल, फल, फूल, खील, बताशे आदि का प्रयोग किया जाता है।

२. गोवर्धन में ओंगा (अपामार्ग) अनिवार्य रूप से रखा जाता है।

३. पूजा के बाद गोवर्धन जी की सात परिक्रमाएँ उनकी जय बोलते हुए लगाई जाती है। परिक्रमा के समय एक व्यक्ति हाथ में जल का लोटा व अन्य खील (जौ) लेकर चलते हैं। जल के लोटे वाला व्यक्ति पानी की धारा गिराता हुआ तथा अन्य जौ बोते हुए परिक्रमा पूरी करते हैं।

४. गोवर्धन गोबर से लेटे हुए पुरुष के आकार में बनाए जाते हैं। इनकी नाभि के स्थान पर एक कटोरी या मिट्टी का दीपक रख दिया जाता है। फिर इसमें दूध, दही, गंगाजल, शहद, बताशे आदि पूजा करते समय डाल दिए जाते हैं और बाद में इसे प्रसाद के रूप में बाँट देते हैं।

५. अन्नकूट में चंद्र–दर्शन अशुभ माना जाता है। यदि प्रतिपदा में द्वितीया हो तो अन्नकूट अमावस्या को मनाया जाता है।

६. इस दिन प्रातः तेल मलकर स्नान करना चाहिए।

७. इस दिन पूजा का समय कहीं प्रातःकाल है तो कहीं दोपहर और कहीं पर सन्ध्या समय गोवर्धन पूजा की जाती है।

८. इस दिन सन्ध्या के समय दैत्यराज बलि का पूजन भी किया जाता है।

६. गोवर्धन गिरि भगवान के रूप में माने जाते हैं और इस दिन उनकी पूजा अपने घर में करने से धन, धान्य, संतान और गोरस की वृद्धि होती है। आज का दिन तीन उत्सवों का संगम होता है।

१०. इस दिन दस्तकार और कल–कारखानों में काम करने वाले कारीगर भगवान विश्वकर्मा की पूजा भी करते हैं। इस दिन सभी कल–कारखाने तो पूर्णतः बंद रहते ही हैं, घर पर कुटीर उद्योग चलाने वाले कारीगर भी काम नहीं करते। भगवान विश्वकर्मा और मशीनों एवं उपकरणों का दोपहर के समय पूजन किया जाता है।

प्रलय हुई है।

जहां जहां बचपन रोया है
निरअपराध जहां मोया है
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है
नभ ने भी धीरज खोया है
होते है दुष्कर्म जहां पर
अपमानित है धर्म जहां पर
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है
मरी आँख की शर्म जहां पर
सुविधाशुल्क जहां चलता है
व्यक्ति व्यक्ति को छलता है
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है
न्याय पिजरें में पलता है।
जहां उपेक्षित हैं प्रतिभाएं
रेबड़ी अन्धे के सुत खाये
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है

सम्मानित होते चौंपायें
बालापन है श्रमिक जहां पर
बन्धुवा है माँ बहन जहां पर
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है
हुई जिंदगी रहन जहां पर
करे जहां शासन मनमानी
पक्ष पात पर आय न ग्लानी
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है
सब कुछ वहां लीलता पानी
जहां नहीं चेतनता वाकी
हावी है समाज पर साकी
वहीं वहीं पर प्रलय हुई है
सबै पीसती समय की चाकी

हितेश कुमार शर्मा

गोवर्धन पूजा की कथा : एक बार एक महर्षि ने ऋषियों से कहा कि कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को गोवर्धन व अन्नकूट की पूजा करनी चाहिए। तब ऋषियों ने महर्षि से पूछा– 'अन्नकूट क्या है? गोवर्धन कौन हैं? इनकी पूजा क्यों तथा कैसे करनी चाहिए? इसका क्या फल होता है? इस सबका विधान विस्तार से कहकर कृतार्थ करें।' महर्षि बोले–'एक समय की बात है–भगवान श्रीकृष्ण अपने सखा और गोप–ग्वालों के साथ गाय चराते हुए गोवर्धन पर्वत की तराई में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि हजारों गोपियाँ ५६ प्रकार के भोजन रखकर बड़े उत्साह से नाच–गाकर उत्सव मना रही थीं। पूरे ब्रज में भी तरह–तरह के मिष्ठान्न तथा पकवान बनाए जा रहे थे। श्रीकृष्ण ने इस उत्सव का प्रयोजन पूछा तो गोपियाँ बोली–'आज तो घर–घर में यह उत्सव हो रहा होगा, क्योंकि आज वृत्रासुर को मारने वाले मेघदेवता, देवराज इन्द्र का पूजन होगा। यदि वे प्रसन्न हो जाएँ तो ब्रज में वर्षा होती है, अन्न पैदा होता है, ब्रजवासियों का भरण–पोषण होता है, गायों का चारा मिलता है तथा जीविकोपार्जन की समस्या हल होती है।'

यह सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा–'यदि देवता प्रत्यक्ष आकर भोग लगाएँ, तब तो तुम्हें यह उत्सव व पूजा जरूर करनी चाहिए। गोपियों ने यह सुनकर कहा–'कोटि–कोटि देवताओं के राजा देवराज इन्द्र की इस प्रकार निंदा नहीं करनी चाहिए। यह तो इन्द्रोज नामक यज्ञ है। इसी के प्रभाव से अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि नहीं होती।' श्रीकृष्ण बोले–'इंद्र में क्या शक्ति है, जो पानी बरसा कर हमारी सहायता करेगा? उससे अधिक शक्तिशाली तो हमारा यह गोवर्धन पर्वत है। इसी के कारण वर्षा होती है। अतः हमें इन्द्र से भी बलवान गोवर्धन की पूजा करनी चाहिए।' इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के वाक–जाल में फँसकर ब्रज में इन्द्र के स्थान पर गोवर्धन की पूजा की तैयारियाँ शुरू हो गईं। सभी गोप–ग्वाल अपने–अपने घरों से सुमधुर, मिष्ठान पकवान लगाकर गोवर्धन की तलहटी में श्रीकृष्ण द्वारा बताई विधि से गोवर्धन पूजा करने लगे।

उधर श्रीकृष्ण ने अपने आधिदैविक रूप से पर्वत में प्रवेश करके ब्रजवासियों द्वारा लाए गए सभी पदार्थों को खा लिया तथा उन सबको आशीर्वाद दिया। सभी ब्रजवासी अपने यज्ञ को सफल जानकर बड़े प्रसन्न हुए। नारद मुनि इन्द्रोज यज्ञ देखने की इच्छा से वहाँ आए। गोवर्धन की पूजा देखकर उन्होंने ब्रजवासियों से पूछा तो उन्होंने बताया– 'श्रीकृष्ण के आदेश से इस वर्ष इन्द्र महोत्सव के स्थान पर गोवर्धन पूजा की जा रही है।' यह सुनते ही नारद उल्टे पाँव इन्द्रलोक पहुँचे तथा उदास तथा खिन्न होकर बोले–'हे राजन! तुम महलों में सुख की नींद सो रहे हो, उधर गोकुल के निवासी गोपों ने इंद्रोज बंद करके आप से बलवान गोवर्धन की पूजा कर दी है। आज से यज्ञों आदि में उसका भाग तो हो ही गया। यह भी हो सकता है कि किसी दिन श्रीकृष्ण की प्रेरणा से वे तुम्हारे राज्य पर आक्रमण करके इन्द्रासन पर भी अधिकार कर ले।' नारद तो अपना काम करके चले गए। अब इन्द्र क्रोध में लाल–पीले हो गए। ऐसा लगता था, जैसे उनके तन–बदन में अग्नि ने प्रवेश कर लिया हो। इन्द्र ने इसमें अपनी मानहानि समझकर, अधीर होकर मेघों को आज्ञा दी– 'गोकुल में जाकर प्रलयकालिक मूसलाधार वर्षा से पूरा गोकुल तहस–नहस कर दें,

शेष पृष्ठ 11 पर

भाई बहन के अटूट प्यार का प्रतीक भाई दूज

मनमोहन कुमार आर्य

कार्तिक अमावस्या दीपावली के बाद शुक्ल पक्ष के दूसरे दिन भाई दूज का पर्व देश भर में मनाया जाता है। यह पर्व भाई व बहन के प्रेम, स्नेह, समर्पण, परस्पर रक्षा, सहयोग, सहायता, सेवा, शुभकामना, आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे के लिए त्याग व बलिदान का प्रतीक है। इसका जब आधार खोजने का प्रयास किया गया तो इसका मूल व आधार हमें वेद में प्राप्त हुआ। वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र है–''मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यंचः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रयाः।।'' वेद के इस मंत्र में कहा गया है कि कोई भी भाई अपने भाई के साथ द्वेष न करे। कोई भी बहन अपनी बहन से द्वेष कभी न करे। बहन–भाई भी परस्पर द्वेष न करें। सभी बहन व भाई परस्पर प्रेम आदि गुणों से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल व कल्याण की भावना वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें। इसको इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि सभी भाई अपने भाइयों से हमेशा प्रेम करें व एक दूसरे को आदर व सम्मान दें। सभी बहनें अपनी बहनों से हमेशा प्रेम व सम्मानजनक व्यवहार करें। बहन–भाई भी परस्पर प्रेम व सद्भावनापूर्ण व्यवहार करें। सभी बहन व भाई द्वेष, स्वार्थ, अन्यमनस्कता व शत्रुता आदि के व्यवहार का पूर्णतया त्याग करके परस्पर सच्चे हार्दिक प्रेम से पूर्ण सभी सद्गुणों आदि से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल व कल्याण की भावना वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें। यह मंगलकारक रीति ही इस पर्व का आधार प्रतीत होती है।

आज समाज में देखा जाता है कि जब तक बच्चे छोटे होते हैं तो उनमें परस्पर प्रेम व स्नेह भरपूर होता है। बाल्यकाल में भाई से भाई, बहन से बहन तथा बहन–भाई परस्पर त्याग भावना से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं और सबमें एक दूसरे के प्रति दृढ़ प्रेम बंधन होता है। एक दूसरे के सुख में सुखी व एक दूसरे के दुख में दुखी होते हैं। परन्तु आयु बढ़ने के साथ बहनों को भी और भाइयों को भी नई–नई समस्याओं से जूझना व गुजरना पड़ता है और परिवर्तित परिस्थितियों में ढलना पड़ता है। देश, काल व परिस्थितियों के कारण इन प्रेम सम्बन्धों में कुछ कमी सी अनुभव होने लगती है। युवावस्था में बहन व भाई का विवाह होने के बाद नई परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। दोनों की ही पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। फिर संतानों के जन्म से जिम्मेदारियों में और वृद्धि होने से मनुष्य अपने सम्मुख उपस्थित समस्याओं व उनके निराकरण एवं समाधान के बारे में ही सोचता रहता है। यह आवश्यक नहीं कि सभी व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति सदैव अच्छी ही रहे। उसे बहुत अधिक परिश्रम करना होता है। कुछ व अधिकांश मामलों में इतना कुछ करने पर भी सभी आवश्यकतायें व इच्छायें पूरी नहीं होती जिसका प्रभाव भाई–भाई, बहन–बहन तथा भाई–बहन के संबंधों पर पड़ता है। सबका परस्पर मिलना–जुलना कम व बंद हो जाता है। ऐसी स्थिति में भाई व बहन के संबंध को बनाए रखने के लिए हमें लगता है कि ''भाई दूज'' का पर्व या त्योहार अपनी भूमिका निभाता है। इस दिन सरकारी विभागों में तो राजपत्रित या निर्बन्धित अवकाश भी होता है। अतः इसका लाभ उठाकर बहन भाई के घर या भाई बहन के पास जाकर परस्पर मिलकर, एक दूसरे के सुख व दुःख जानकर, परस्पर सहयोग कर, स्वादिष्ट भोजन व मिष्ठान्न आदि का सेवन कर तथा भाई की ओर से बहन को सामर्थ्य के अनुसार वस्त्र, आभूषण, उपयोगी उपहार व कुछ धन देकर इस पर्व को मनाते हैं। हमें लगता है कि पूर्व काल में तो इस पर्व का अपना महत्त्व रहा ही है परन्तु आज की परिस्थितियों में इसका महत्त्व और अधिक हो गया है। इस दिन बहन व भाइयों में किसी कारण कुछ मनमुटाव होकर परस्पर दूरियाँ बढ़ गई हों, तो परस्पर समझदारी का परिचय देकर उन्हें भी दूर किया जा सकता है। अतः आज इस भैया दूज के पर्व को मनाने में हमें इसकी महत्ता, प्रासंगिकता व उपयोगिता अनुभव होती है और हमारा विचार है कि सभी पाठक हमारे विचारों से सहमत होंगे।

ईश्वर प्रदत्त वेद मंत्र कह रहा है कि भाई–भाई से, बहन बहन से और भाई व बहनें परस्पर द्वेष न करें। इसका अर्थ कि यह सब अपने जीवनों में परस्पर प्रेम व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करें और इसी लक्ष्य की प्राप्ति व इसे स्थिर रखने के लिए ही भारतीय संस्कृति में इस पर्व की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया गया है। हमें लगता है कि आर्येतर व देश व संसार के सभी अहिन्दुओं को भी इस पर्व की सार्थकता के कारण इसे मनाना व अंगीकृत करना चाहिए और ''देर आये दुरस्त आये'' की कहावत को चरितार्थ करना चाहिए। वेदों के अनुसार जीवन सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए ही तो परमात्मा से मिला है। अतः इसी भावना से मनुष्यमात्र को इस पर्व को मनाना चाहिए। इस पर्व को मनाने से समाज में प्रेम व सौहार्द में वृद्धि होगी और आसुरी प्रवृत्तियों में कुछ कमी आ सकती है। वेद मंत्र में अगला संदेश है कि सभी बहन व भाई परस्पर प्रेम आदि गुणों से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल व कल्याण की भावना वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे शेष पृष्ठ 11 पर

कांग्रेस ही नहीं, पूरे देश के भी नेहरू : मनमोहन सिंह

प्रतिक्रिया

१. वह जाति मुर्दा है जो देश को भारी हानी पहुंचाने वाले नेता की भी जयन्ती और मृत्यु दिवस मनाकर उसे श्रद्धांजलि देती है।

२. नेहरू अययाश स्वभाव के थे। अंग्रेजों ने, उनकी इस कमी का, भरपूर लाभ उठाया। पावेल से उसकी मित्रता करा दी। कांग्रेस की ओर से बोलने का अधिकार, उन्हें दिला दिया।

३. १९४६ में, उन्हें अन्तिम सरकार का प्रधानमंत्री बनवा दिया।

४. मुस्लिम लीग की सीधी कार्रवाई में जो दंगे हुए उन्हें नियंत्रित करने में नेहरु सरकार असफल रही।

५. ३ जून को देश विभाजित करने की सहमति कांग्रेस ने दे दी।

६. प्रस्तावित सीमा आयोग का अध्यक्ष सिरिल रैडक्लिफ को मान लिया जो लन्दन में जिन्ना का जूनियर वकील रहा था।

७. मुस्लिम लीग ने, पूरा पंजाब– पूरा बंगाल भी पाकिस्तान के लिए मांगा।

८. नेहरू को खंडित भारत का प्रधानमंत्री बनने की बहुत जल्दी थी अतः वे श्री मती पावेल के माध्यम से अपनी स्वीकृति दे दिया करते थे।

९. पूर्वी पंजाब सरदार मास्टर तारासिंह के प्रयास से और पश्चिम बंगाल डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी के अथक प्रयत्नों से भारत में रहा।

१०. यदि नेहरू पूरा जोर लगाकर रैडक्लिफ से बार बार मिलते तो लाहौर–स्यालकोट–ननकाना साहिब–सच्चा सौदा–करतारपुर–थारपारकर–उमर कोट आदि नगर पश्चिमी पाकिस्तान को तथा चटगांव पहाड़ी क्षेत्र का अधिकांश भाग पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) को नहीं मिलता बल्कि ये नगर भारत में ही रहते।

११. नेहरू–गांधी–मौलाना आजाद अधिक से अधिक क्षेत्र पाकिस्तान को देने के पक्ष में थे इसलिए नेहरू ने कह दिया कि वे रैडक्लिफ से मिलने नहीं जाएंगे बल्कि रैडक्लिफ अध्यक्ष सीमा निर्धारण आयोग का जो निर्णय होगा उसे भारत स्वीकार करेगा। इससे पाकिस्तान को अधिक जमीन मिल गई।

१२. यदि अखंडित भारत का प्रथम प्रधानमंत्री जिन्ना को नेहरू ने बनने दिया होता तो भारत का विभाजन नहीं हो सकता था।

१३. यदि खण्डित भारत का प्रथम प्रधानमंत्री पटेल को नेहरू ने बनने दिया होता तो जम्मू–कश्मीर का विलय विवादास्पद नहीं होता। संविधान भी उत्तम बनता।

१४. नेहरू की अदूरदर्शिता के कारण जम्मू –कश्मीर का विलय अभी तक विवादास्पद है और रियासत का २८००० वर्ग मील क्षेत्र पाकिस्तान के अवैध कब्जे में है।

१५. नेहरू की गलत सोच का लाभ उठाते हुए चीन ने अक्षयचिन का १४००० वर्गमील क्षेत्र अवैध रूप से सड़के बनाकर हथिया लिया। देश में रावण राज्य आ गया।

१६. स्वतन्त्र तिब्बत को चीन का स्वायत्तशासी राज्य मान लिया। मुस्लिम लीग से गठबंधन किया।

१७. तीन मूर्ति भवन २५ एकड़ क्षेत्र में है। उसे असफल–हानिकारक नेता का स्थायी स्मारक बनाना बिल्कुल गलत है।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

जरा फिर सोचिए और स्वयं इन प्रश्नों के उत्तर खोजिए...

1. विश्व में लगभग 52 मुस्लिम देश है, एक मुस्लिम देश का नाम बतायें जो हज के लिए सब्सिडी देता हो?
2. एक मुस्लिम देश बताईये जहाँ हिन्दुओं के लिए विशेष कानून है। जैसे कि भारत मे मुसलमानों के लिए है?
3. किसी एक देश का नाम बताईये, जहाँ 85% बहुसंख्यकों को ''याचना'' करनी पड़ती है, 15% अल्पसख्यकों को संतुष्ट करने के लिए?
4. एक मुस्लिम देश का नाम बताइये, जहाँ का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री गैर–मुस्लिम है?
5. किसी 'मुल्ला' या ''मौलवी'' का नाम बताइये, जिसने आतंकवादियों के खिलाफ फतवा जारी किया हो?
6. महाराष्ट्र, बिहार, केरल जैसे हिन्दू बहुल राज्यों में मुस्लिम मुख्यमंत्री हो चुके हैं, क्या आप कल्पना कर सकते है कि मुस्लिम बहुल राज्य ''कश्मीर'' में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री हो सकता है?
7. 1947 में आजादी के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू जनसंख्या 24% थी अब वह घटकर 1.7 प्रतिशत रह गई है, उस समय तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब आज का अहसान फरामोश बांग्लादेश) में हिन्दू जनसंख्या 30% थी जो अब 7% से भी कम हो गई है। क्या हुआ गुमशुदा हिन्दुओं का? क्या वहाँ (और यहाँ भी) हिन्दुओं के कोई मानवाधिकार है?
8. इस दौरान भारत में मुस्लिम जनसंख्या कट्टरवादी है?
9. यदि हिन्दू असहिष्णु हैं तो कैसे हमारे यहाँ मुस्लिम सड़कों पर नमाज पढ़ते रहते हैं? लाउडस्पीकर पर दिन भर चिल्लाते रहते हैं कि ''अल्लाह के सिवाय'' और कोई शक्ति नहीं है''?
10. सोमनाथ मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए देश के पैसे का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए ऐसा गाँधीजी ने कहा था, लेकिन 1948 में ही दिल्ली की मस्जिदों को सरकारी मदद से बनवाने के लिए उन्होंने नेहरू और पटेल पर दबाव बनाया, क्यों?
11. कश्मीर, नागालैण्ड अरूणाचल प्रदेश, मेघालय आदि में हिन्दू अल्पसंख्यक है, क्या उन्हें विशेष सुविधा मिलती है?
12. हज करने के लिए सब्सिडी मिलती है जबकि मानसरोवर और अमरनाथ जाने पर टैक्स देना पड़ता है, क्यों?
13. मदरसे और क्रिश्चियन स्कूल अपने–अपने स्कूलों में बाईबल और कुरान पढ़ा सकते हैं तो फिर सरस्वती शिशु मन्दिर में और बाकी स्कूलों में गीता और रामायण क्यों नही पढ़ाई जा सकती?
14. गोधरा के बाद मीडिया मे जो हंगामा बरपा, वैसा हंगामा कश्मीर के चार लाख हिन्दुओं की मौत और पलायन पर क्यों नहीं होता?

शेष पृष्ठ 7 का

भारत सदियों से विश्वगुरू.......

❖ पाइथागोरस को इस सिद्धान्त का आविष्कार कर्ता माना जाता है कि समकोण त्रिभुज की समकोणवाली भुजा पर स्थित वर्ग का क्षेत्रफल अन्य दो भुजाओं पर स्थित वर्गों के क्षेत्रफल के योग के बराबर होता है परंतु बोधायन ने पाइथागोरस से बहुत पहले ही अर्थात् आज से २८०० वर्ष पूर्व ही यह सिद्धान्त स्थापित किया था।

❖ गुरुत्वाकर्षण के नियम का आविष्कारक न्यूटन को माना जाता है। किन्तु इससे बहुत पहले ही भास्कराचार्य के ग्रन्थ 'सिद्धान्त शिरोमणि' में यह लिखा जा चुका था कि भारी पदार्थ अपने भार से पृथ्वी पर गिरते मालूम होते हैं, पर यह पृथ्वी का आकर्षण है जो उन्हें नीचे खीच लाता है।

❖ भारतीयों को पदार्थ विज्ञान (प्रकाश, उष्णता, ध्वनि, आकर्षण–धर्म और विद्युत आदि) भली–भाँति ज्ञात था।

❖ रसायनशास्त्र सम्बन्धी उनका कार्य वैद्यकशास्त्र में स्पष्ट रूस वर्णित है।

❖ सूर्य किरणों को केन्द्रीभूत करने के लिए वे गोल और अंडाकार 'लेंस' तैयार करते थे।

विश्वगुरु भारत

प्राचीन समय में भारतवर्ष में अनेक विद्वान व महापुरुष हुए। समय समय पर इन विद्वानों ने अनेक लोगों का मार्गदर्शन किया। उस समय भारत में वेद आयुर्वेद, योग, चिकित्सा आदि का विकास हो चुका था। इतिहास पर नजर डालें तो पायेंगे कि विश्व के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय भारत में थे।

१. नालन्दा विश्व विद्यालय, २. तक्षशिला विश्व विद्यालय, ३. विक्रमशिला विश्वविद्यालय ४. रत्नागिरी विश्वविद्यालय, ५. ललितगिरि विश्वविद्यालय, ६. जगददता विश्वविद्यालय ७. पुष्पागिरी विश्वविद्यालय, ८. उदयगिरी विश्वविद्यालय, ६. सोमापुरा महावीरा, १०. उदंतपुरी विश्वविद्यालय, ११. वल्लभी विश्वविद्यालय, १२. बिक्रमगिरी विश्वविद्यालय, १३. नागार्जुनकोंडा विश्र्वविद्यालय।

इन सभी विश्वविद्यालयों में वेद, वेदांत और सांख्य पढ़ाये जाते थे। व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योगशास्त्र तथा चिकित्साशास्त्र भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत थे।

योग शिक्षा–दुनियाँ के सभी ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और यहूदी देशों ने योग को मान्यता दी याने भारत को गुरू माना। योग सिर्फ आसन–प्राणायाम नहीं है। आसन–प्राणायाम तो समाधि तक पहुँचने की पहली सीढ़ी है। यदि भारत की प्रेरणा से दो–तीन अरब लोग भी इस पहली सीढ़ी को पकड़ लें तो हमारी दुनियाँ का नक्शा ही बदल जाएगा। यूँ तो योग पहले भी दुनियाँ के कई देशों में फैल चुका था लेकिन अब इसे विश्व स्वीकृति मिल गई है। अस्तु हम अपने पुरखों पर गर्व करें कि भारत सदियों से विश्वगुरु था और रहेगा इसके लिये हम सभी सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

शेष पृष्ठ 6 का

देवभूमि भारत......

सफल उद्योगशील पराक्रमी, महापुरुषों की लम्बी श्रृंखला और मानव मात्र के लिए कल्याणकारी तत्वज्ञान आदि सभी बातें होते हुए भी इस प्रकार का धोर पतन क्यों हुआ? **जब तक अपने समाज के सभी लोगों के हृदयों में यह धारणा सुस्पष्ट थी कि हम सब एक हैं, अपने हित, अपने स्वार्थ, इस संसार में एक ही हैं, तब तक तो अपना ध्वज संसार में सर्व दूर विजयशाली रहा, परन्तु जब इसमें कुछ भेद उत्पन्न हो गया, छोटे-छोटे राज्य उत्पन्न हो गए, अलग-अलग स्वार्थ खड़े हो गए, आपसी लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया। तब शक्ति का क्षय हुआ और सभी प्रकार की आपत्तियाँ में सहनी पड़ी।** तात्पर्य यह कि अपने सबके हितस्वार्थ परस्पर निगडित, एक रूप हैं। उनमें भिन्नता की भावना देखना, सर्वनाश को निमंत्रण देना है। भविष्यकाल की एक आकांक्षा अपने हृदय को नित्य प्रेरणा देती है कि इस सारे जगत में मानवता, बंधुता, और श्रेष्ठता का सुख पूर्ण जीवन प्रस्थापित करेंगे।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 9 का **भाई बहन के अटूट.........**

के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें। वेदमंत्र की यह शिक्षा आज के दिन आत्म निरीक्षण का अवसर प्रदान करती है। इस दिन सभी भाई व बहनों को वेद की इस शिक्षा पर विचार करना चाहिए कि क्या वह वेद की इस शिक्षा के अनुकूल व अनुरूप व्यवहार कर रहे हैं या नहीं। यदि नहीं तो इस शिक्षा के अनुसार अपने जीवन व व्यवहार में परिवर्तन व संशोधन करना चाहिए। हम समझते हैं कि १ अरब ९६ करोड़ ८ हजार वर्ष पूर्व ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई यह शिक्षा आज की प्रासंगिक, उपयोगी व व्यावहारिक है। इस दिन हमें अपने जीवन के लक्ष्य व साधनों से परिचित कराने वाले वेदों के अध्ययन का व्रत भी लेना चाहिए।

शेष पृष्ठ 5 का **लोक आस्था का महापर्व.......**

हुआ नारियल, पांच प्रकार के फल, पूजा का अन्य सामान ही काफी होता है। शाम को पूजा करने के बाद घर वापस आया जाता है और अगली सुबह की तैयारी की जाती है। अगले दिन सुबह–सुबह सूर्य निकलने से पहले ही घाट पर पहुंचा जाता है और भगवान सूर्य के निकलते ही उन्हें अर्घ्य दिया जाता है। इसके बाद वहीं पर प्रसाद ग्रहण कर व्रत को तोड़ा जाता है और भगवान सूर्य को यह व्रत रखने की क्षमता प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया जाता है।

शेष पृष्ठ 1 का **आतंक का समर्थन बंद करे........**

पाकिस्तान आम की तरफ से उन्हें लगातार मदद दी जा रही है। सेना के काफिले पर प्रदर्शनकारियों ने फेंके पत्थर, २२ साल के जवान की मौत पर सेना प्रमुख ने कहा कि इसका नुकसान पाकिस्तान को ही होगा। उन्होंने कहा, "जो आतंकवादी देश में घुसपैठ करता है हम उसे घर में खत्म कर सकते हैं लेकिन ये माहौल बना रहा तो हमारे पास कार्रवाई के और साधन हैं। और हम कर भी सकते हैं, अच्छा होगा पकिस्तान खुद समझ जाये की इस तरह की कार्रवाई से कोई फायदा नहीं। प्रदर्शनकारियों ने अनंतनाग बाईपास के पास से गुजर रहे सेना के काफिले पर पथराव किया। इस दौरान एक पत्थर २२ साल के जवान राजेंद्र सिंह के सिर पर लगा। चोट गहरी थी और खून रुक नहीं रहा था। जवान को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। जवान की मौत पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए रावत ने कहा कि पत्थरबाजों से सख्ती से निपटा जाएगा।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये

द्विवार्षिक...300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 8 का **गोवर्धन पूजा पर......**

वहाँ प्रलय का सा दृश्य उत्पन्न कर दें।' पर्वताकार प्रलंयकारी मेघ ब्रजभूमि पर जाकर मूसलाधार बरसने लगे। कुछ ही पलों में ऐसा दृश्य उत्पन्न हो गया कि सभी बाल–ग्वाल भयभीत हो उठे। भयानक वर्षा देखकर ब्रजमंडल घबरा गया। सभी ब्रजवासी श्रीकृष्ण की शरण में जाकर बोले–'भगवान! इन्द्र हमारी नगरी को डुबाना चाहता है, आप हमारी रक्षा कीजिए।' गोप–गोपियों की करूण पुकार सुनकर श्रीकृष्ण बोले–'तुम सब गऊओं सहित गोवर्धन पर्वत की शरण में चलो। वही सब की रक्षा करेंगे।' कुछ ही देर में सभी गोप–ग्वाल पशुधन सहित गोवर्धन की तलहटी में पहुँच गए। तब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन अपनी कनिष्ठा अंगुली पर उठाकर छाता सा तान दिया और सभी गोप–ग्वाल अपने पशुओं सहित उसके नीचे आ गए। सात दिन तक गोप–गोपिकाओं ने उसी की छाया में रहकर अतिवृष्टि से अपना बचाव किया। सुदर्शन चक्र के प्रभाव से ब्रजवासियों पर एक बूँद भी जल नहीं पड़ा। इसे इन्द्र को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह चमत्कार देखकर और ब्रह्माजी द्वारा श्रीकृष्ण अवतार की बात जानकर इन्द्र को अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ। यह स्वयं ब्रज गए और भगवान कृष्ण के चरणों में गिरकर अपनी मूर्खता पर क्षमायाचना करने लगे। सातवें दिन श्रीकृष्ण ने गोवर्धन को नीचे रखा और ब्रजवासियों से कहा–'अब तुम प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा कर अन्नकूट का पर्व मनाया करो।' तभी से यह उत्सव (पर्व) अन्नकूट के नाम से मनाया जाने लगा।

शेष पृष्ठ 2 का **मनुष्य योनि छोड़ते समय........**

परोपकार की दृष्टि से जो भी कार्य होता है वह अच्छा व शुभ ही होता है जैसे भगवान कृष्ण व महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में किया। ऐसे लोग मृत्यु के बाद सीधे मोक्ष में जाते हैं।

तीनों गतियों का वर्णन तो मैंने संक्षिप्त में कर दिया। अब मेरा स्वयं का यह विचार है कि मनुष्य की आत्मा जब शरीर को छोड़ती है तो उसी समय ईश्वर की न्याय व्यवस्था इस आत्मा या जीव ने इस मनुष्य शरीर में जितने भी अच्छे व बुरे कर्म किये उसी के आधार पर यह निर्णय कर देती है कि यह आत्मा कितनी नीचे की योनियों में जाकर पुनः मनुष्य योनि में आवेगी। इसका कारण यह है कि मनुष्य योनि ही योग व कर्म योनि है जिसको अच्छे कर्मो का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मो का फल दुःख के रूप में मिलते हैं। बाकी सब नीचे की योनियाँ केवल भोग योनियों है। उन योनियों में जितना भोग भोगने के लिए निर्धारित आय दी है इसी आयु में उतना ही भाग अगला योनि में चला जाता है। जब पूरे भोग जब नीचे ही योनियों में भोग लेता है। तब वह मनुष्य पान में पुनः आ जाता है। इसलिए यह विचार है कि जीन जब मनुष्य योनि छोड़ता हैं तभी वह जीव कितनी योनियों के बाद पुनः मनुष्य योनि में आयेगा यह निर्णय हो जाता है।

शेष पृष्ठ 7 का **पर्यावरण पर हावी.......**

के आदर्श स्वरूप व सम्पूर्ण संस्कृति पर आघात कर रखा है। यह नैतिक पतन व सांस्कृतिक प्रदूषण ही इस दुर्दशा के लिए उत्तरदायी है। एक पेड़ दस पुत्रों के समान होता है। एक वैज्ञानिक सर्वे के अनुसार एक फलदार पेड़ अपनी पूरी उम्र (करीब ८०–१०० वर्ष) में समाज को अपनी छाया, आर्द्रता, पक्षी–घोंसला, पत्तियाँ, फूल–फल व लकड़ी के जरिए करीब १० करोड़ रुपये का लाभ मनुष्य को देता है। हमारे दाह–संस्कार में कम से कम ६–७ क्विंटल लकड़ी की जरूरत होती है। हम कागज व इमारती लकड़ी के उपयोग के कारण इन पेडों के कितने ऋणी हैं।

हम चाहें, तो इस बिगड़ते पर्यावरण व सांस्कृतिक प्रदूषण को कम करने के लिए, इस अंधकार में एक दीपक तो जला ही सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कम से कम एक पेड़ लगाकर, उसे पोषित करना चाहिए। पानी का कम उपयोग करें। जानवर व पक्षियों के माँस–खालों से बनी वस्तुओं का उपयोग कदापि नहीं करें। कम दूरी का आवागमन साइकिल से करें। पॉलीथिन प्रयोग में न लें। नदियों व समुद्र में कचरा न डालें। विद्युत बचाएँ। पशु–पक्षियों के लिए दाना–पानी की व्यवस्था करें। पर्यावरण संरक्षण एवं संस्कार वृद्धि की गतिविधियों में तन–मन–धन से भाग लें। देहदान करें या विद्युत शवदाह का प्रयोग करें। ऐसे ही कुछ उपायों से हम पर्यावरण संतुलन ठीक रखने और समाज को बेहतर बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778 डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

घुसपैठियों को नागरिकता देने का फैसला

रोजनामा राष्ट्रीय सहारा (१८ सितम्बर) के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने फैसला किया कि वहां रहने होने वाले बांग्लादेशियों और अफगानियों को पाकिस्तान की नागरिकता प्रदान की जाएगी। प्रध ानमंत्री इमरान खान ने कहा कि कराची में आतंकवादी गतिविधियों में कमी आई है मगर लूटपाट की घटना बढ़ गई है। इमरान खान ने कहा कि बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आने वाले लोगों के साथ पाकिस्तान का पहचान पत्र नहीं है इसलिए उन्हें नौकरी नहीं मिलती। यही कारण है कि ये लोग अपराधों के दलदल में फंस जाते हैं। पाकिस्तान में पाकिस्तान नागरिक कानून (१९५१) लागू है। इसके तहत १९५१ के बाद पाकिस्तान में पैदा होने वाला व्यक्ति पाकिस्तान का नागरिक है। कराची में अफगानों और बांग्लादेशियों की भारी संख्या आबाद है और इनमें से अधिकांश स्लम एरिया में रहते हैं। पुरानी सरकार ने देश में बढ़ती हुई आतंकवादी घटनाओं के देखते हुए राष्ट्रीय पहचान–पत्र जारी करने के नियम सख्त कर दिए थे। सिंध के क्षेत्रीय दल बांग्लादेशियों और अफगानों की वापसी की मांग करती आ रही है। बांग्लादेश की स्थापना के बाद वहां से काफी लोग भागकर पाकिस्तान आ गए थे मगर उनके पास पाकिस्तान नागरिकता नहीं है।

देश में नई शरई अदालतों को चुनौती

इत्तेमाद (३ सितम्बर) के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय ने निकाह, तलाक और अन्य मामलों का फैसला करने के लिए शरई अदालतों को असंवैधानिक करार देने से संबंधित एक मुस्लिम महिला की याचिका पर विचार करने का फैसला किया है। सर्वोच्च न्यायालय ने गत वर्ष सुन्नी मुसलमानों में एक साथ तीन तलाक देने की प्रथा को अवैध घोषित किया था और निकाह–हलाला व बहुपत्नी प्रथा के बारे में विचार करने के लिए याचिकाओं को एक विशेष बेंच के पास भेजा था। ज्ञातव्य है कि इस्लामी शरा के अनुसार एक मुस्लिम व्यक्ति को एक साथ चार निकाह करने की अनुमति है। जहां तक हलाला का संबंध है, तो इस प्रथा के तहत कोई तलाकशुदा महिला अपने पूर्व पति से पुनः निकाह तब तक नहीं कर लेती जब तक वह किसी अन्य व्यक्ति से निकाह करके उससे शारीरिक संबंध स्थापित करे और यदि वह दूसरा व्यक्ति उसे तलाक दे देता है तो ऐसी स्थिति में वह पुनः अपने पूर्व पति से निकाह कर सकती है। इसके अतिरिक्त गोद लेने की प्रथा और उत्तराधिकार के कानून के बारे में भी शरई अदालतों के फैसले को न्यायालय में चुनौती दी गई है। याचिका में कहा गया है कि अन्य संवैधानिक कानूनों की तरह मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत भी जो मामले आते हैं वह भी संविधान के तहत होने चाहिए। अगर वह मूलभूत अधि ाकारों और संविधान के तहत नहीं हैं तो उन्हें असंवैधानिक घोषित किया जाना चाहिए। इसमें मांग की गई है कि संविधान के तहत दिए गए अधिकार प्रत्येक महिलाओं के पास होने चाहिए। केन्द्र पहले ही घोषणा कर चुके है कि अगर सर्वोच्च न्यायालय निकाह–हलाला की कानूनी स्थिति के बारे में सरकार से उसकी राय मांगेगा तो वह हलाला प्रथा का विरोध करेगा।

ससुर ने किया हलाला

इत्तेमाद (३ सितम्बर) में प्रकाशित संबल के समाचार के अनुसार एक महिला ने आरोप लगाया कि उसके ससुर ने जबरन उसके साथ निकाह करके उसके साथ हलाला किया और उसके साथ बलात्कार किया। इस महिला की शिकायत पर पांच लोगों के खिलाफ, जिसमें उसका पति भी शामिल है, मुकदमा दर्ज किया गया है। इस मुकदमे में उसके पति, ससुर और दो मौलवियों को भी आरोपी बनाया गया है। बरेली क्षेत्र के अतिरिक्त महानिर्देशक पुलिस प्रेम प्रकाश ने बताया कि मुरादाबाद की रहने वाली इस महिला का निकाह ७ दिसम्बर, २०१४ को हुआ था। इस महिला ने आरोप लगाया कि २५ दिसम्बर, २०१५ को उसे उसके ससुराल से निकाल दिया गया। जिस पर ३ जनवरी, २०१६ को इस महिला ने अपने ससुराल वालों के खिलाफ उसे परेशान करने का मुकदमा दर्ज करवाया। इसके बाद कुछ समय बाद उसके ससुराल वालों ने उससे समझौता कर लिया और उसे वापस ससुराल बुला लिया। दो मौलानाओं ने फतवा दिया कि क्योंकि वो घर से बाहर थी इसलिए शरा के अनुसार उसका तलाक हो गया था। इसलिए पति से पुनः निकाह करने के लिए वह हलाला प्रथा का अनुसरण करे। इसके बाद उसके ससुर ने उससे निकाह करके उससे शारीरिक संबंध स्थापित किए और इस तरह से हलाला प्रथा को अदा किया।

कबिरा खड़ा बजार में

गंगा पर जारी है निर्लज्जता

पिछले कई दशकों से गंगा को लेकर न सिर्फ हजारों करोड़ रूपये खर्च हुए बल्कि चुनावों में गंगा को लेकर मुद्दा बनाकर खूब भुनाया गया। गंगा की अविरलता व निर्मलता सुनिश्चित करने के लिए गंगा एक्ट की मांग को लेकर पिछले १११ दिनों से अनशन कर रहे गंगा पुत्र स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद उर्फ जीडी अग्रवाल का निधन वर्तमान सत्ता की निर्लज्जता का प्रमाण है। गौरतलब है कि सम्पूर्ण गंगा अविरल, निर्मल बनाने के लिए भारत सरकार ने एक बहुत बड़ी कार्य योजना भारत के सात प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा बनवाई थी, लेकिन उस योजना के अनुसार गंगा में काम नहीं हो रहा था। उन्होंने गंगा रक्षा के संबंध में एक कार्य योजना तैयार किया था, जिसके आधार पर एक्ट बनाने के लिए सरकार को ९ अक्टूबर तक का समय दिया था। जब यह मांग पूरी नहीं हुई तो १० अक्टूबर से उन्होंने जल त्याग कर दिया। इसके बाद उन्हें हिरासत में लेकर जबरन ऋषिकेश के एम्स में भर्ती करा दिया गया था। मुजफ्फरनगर के कांधला में २० जुलाई १९३२ को जन्मे जीडी अग्रवाल यानी गुरुदास अग्रवाल को आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं थे बल्कि वे आईआईटी कानपुर में प्रोफेसर रह चुके थे और गंगा को बचाने की मुहिम में लंबे समय से लगे हुए थे। इसी क्रम में उन्होंने २०११ में संन्यास लिया और स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद बन गए। उनका यह कोई पहला अनशन नहीं था बल्कि वे इससे पहले भी २००८ व २००९ में ३८० मेगावाट की भैरोघाटी, ४८० मेगावाट की पाला–मनेरी जल विद्युत व लोहारीनाग–पाला परियोजना के लिए अनशन कर चुके थे। स्वामी सानंद का मानना था कि जैसे पहले गंगा एक्शन प्लान के अंतर्गत अरबों रूपए खर्च करने के बावजूद गंगा की स्थिति में कोई सुधार नहीं बल्कि बिगाड़ ही हुआ है, उसी तरह राष्ट्रीय गंगा नदी घाटी प्राधिकरण व २०२० तक स्वच्छ गंगा मिशन के तहत भी अरबों रूपए खर्च हो जाएंगे और हमारे सामने पछताने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं बचेगा। सवाल है कि सरकार को गंगा के लिए एक्ट बनाने में आखिर परेशानी क्या थी। क्यों ८६ साल के एक वृद्ध को अपनी बात सुनाने के लिए सत्ता के दरवाजे पर सिर पटक–पटककर मरना पड़ा। गंगा को न तो अध्यात्म से मतलब है न ही भौतिकवाद से। वह तो दोनों की ही जीवनरेखा है। अफसोस यह है कि १११ दिनों की भूख हड़ताल के बाद भी उन मुद्दों की तरफ वे लोगों का ध्यान नहीं खींच सके, जिसके लिए उन्होंने भूख हड़ताल की हुई थी। यह हमारी असंवेदनशीलता ही कही जाएगी। क्या कभी गंगा साफ हो पाएगी या फिर हम झूठ–मूठ का 'नमामि गंगे' और 'गंगे ! तव दर्शनात् मुक्ति' ही रटते रह जाएंगे। एक शोध के मुताबिक गंगा में २ करोड़ ९० लाख लीटर प्रदूषित कचरा गिर रहा है। उत्तर प्रदेश में होने वाली १२ फीसदी बीमारियों की वजह गंगा का प्रदूषित जल है। १९८५ में पहली बार गंगा एक्शन प्लान बनाया गया। १५ वर्ष में इस पर ९०१ करोड़ रुपए खर्च हुए। १९९३ में कुछ और नदियों को मिलाकर गंगा एक्शन प्लान–२ शुरू किया गया। राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना बनी। १९९५ से लेकर २०१४ तक ४१९८ करोड़ रुपए खर्च करने का दावा है, लेकिन यदि सच में यह काम हुआ है तो वह गया कहां। सच तो यह है कि सत्ता के सौदागरों के लिए गंगा केवल एक चुनावी जुमला बनकर रह गई है। असल में गंगा की चिंता किसी को नहीं ह

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 07 नवम्बर से 13 नवम्बर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।